॥ तात्काल भृगुप्रश्न भाषा ॥

इसे प्रश्न कल्प भी कहते हैं

जिसको

पंडित हरदेव सहाय मेरठ निवासी ने पुराचीन
पुस्तक से देसी भाषामें उल्था करके
प्रश्न बतलाने वालों के
लाभार्थ रचा
और श्री ज्ञानसागर यंत्रालय में छपकर
प्रकाशित हुवा

इस पुस्तक से प्रश्न बतलाने वालों को ईश्वर
चाहेतो शीघ्र लाभ होने लगताहै इधर
प्रश्नबतलाने आरम्भकरो उधर
दक्षिणा बटुवेमें डालनी
शुरू करो
लो भैया अबईश्वर चाहेतो प्रश्नबतलाने वालों के
भी गहरेहोजांयगे और अनेकपुस्तकतो खरीदे
ही होंगे परन्तु ऐसी पुस्तक एक ना
मिली होगी तुर्न दाम
महाकल्यान

पुस्तक मिलने का पता

[पंडित हरदेवसहाय ज्ञानसागर प्रेस मेरठ]
से कार्ड भेजकर घरबैठे मँगालो मूल्य एकरुपया

सूचना

(१) ये बात ध्यान में रखनी चाहिये कि इस पुस्तक से जो स्त्री या पुरुष प्रश्न बूझे तो शुद्ध चित्त से प्रथम पुस्तक की पूजा श्रद्धा प्रमाण फल फूल या मिष्टान दक्षिणा से करे खाली हाथ प्रश्न बूझना और बतलाना दोनों को अशुभ है ॥

(२) नीती शास्त्र में भी कहा है कि पंडित के पास गणिका के पास वैद्य के पास और बहुत बेटी अर्थात मान ध्यावने के पास किसी कार्य को जावतो खाली हाथ जाने से अशुभ है कार्य की सिद्धी नही पाती ॥

(३) और यह भी समझना चाहिये की इस पुस्तक से कार्य अवश्य जरूरी जो जो प्रश्न हैं सो सो बूझो परन्तु परिक्षा या पुस्तक का इम्तहान लेने के वास्ते जो प्रश्न बूझेगा और बतलावेगा उन दोनों के वास्ते अशुभ फल जानों ॥

प्रश्न बतानेकी रीति

इस पुस्तक के प्रश्न बतलाने की बहुत सुगम यह रीति है कि प्रश्न बूझनेवाला शुद्ध चित्तसे हाथ पैर धोकर जब प्रश्न बूझेतो फूल पान दक्षिणा लेकर आवे तब उसको पूर्व को मुख कर के बिठलावे और उससे कहै कि भृगु जी का ध्यान धर कर जो जो प्रश्न तुम्हें बूझने हों अपने चित्त में सोचलो जब वो सोचले तब उस से विश्नुभगवानका आराधन कराकर कहै कि ये जो प्रश्न चक्र है इसके किसी कोठेमें अंककी संख्यापर उंगली धरवावे जबवो उंगली धरेतो उंगली धरनेवाली संख्यामें प्रच्छकके नाम के अक्षर और भृगु जी के नाम के अक्षर गिनकर जोड़लो फिर अक्षर जोड़ने से जो संख्या हो वह उसी अंक संख्या का पत्रा यानी पुस्तक का वही सफा खोलकर प्रश्न पढ़कर प्रच्छकको सुनादो ईश्वर चाहे सही प्रश्न फल निकलेगा प्रश्न कम मिलेतो फिर अक्षर ठीक समझ कर जोड़ो ॥

आपका शुभचिंतक

पं० हरदेव सहाय शहर मेरठ

सितम्बर स० १९१३

प्रश्न चक्रम्

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
१०१	१०२	१०३	१०४	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०
१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०
१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०
१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०
१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०

श्रीगणेशायनमः

अथ हरदेवका तात्कालिक प्रश्न भाषा

अर्थात प्रश्न कल्प वृक्ष

१.हेपच्छक ये जोतुमने प्रश्नकिया है
जोहोगयासोहोगया अवखुशीकीवार्ता
होनेवालीहैखोटेदिनगये श्रेष्ठआनेवाले
हैंआरामहोकारजफतेहोगाया जिसकी
चाहनाहैमिलेगाऔरयेजोचित्तमेंकाम
विचाराहै देरसेहोगा दिन तुमको बहुत
दिनोंसे मध्यमहैं मर्जीकेमाफिक लाभ
नहींहैनष्टदशामेंरंजक्लेशपीडागुप्तचिंता
शत्रुताहोतीहैसोअपनीरासपैंजोदोतीन
प्रश्नाकिसहैं दानमंत्र जापकरो तबघर
में आनन्द मंगलाचार जीव कीप्राप्ति
यात्रासे लाभ काम फतैहोंगे गुप्तप्राप्ति
होगी तुम्हारे शरीर पैं व्रणयानी फोड़
फुंसी का निशान है आलस्य रहताहै
नई नई वात का चिंतवन करते हो

२. हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फ़िक्र से गुज़रे और खर्च विशेष लाभमध्यम सो अब प्राप्तिहोगी जीवका लाभहोगा व्याधा रंजनष्टहोंगे घरमें खुशीहोगी चित्तकीचिंताचित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसी नई नई उठतीहैंसोवृथाजातीहैंएकजीवमेंचित्त बहुतरहताहै अब ईश्वर चाहेतो कहींसे खुशीकी बातसुनोगेउच्चपदवी प्राप्तहोगी. नाकिस ग्रहोंकादानऔरसुबेश्याम शिवजीका भजनकराकरो और येजो प्रश्न किया है वो कामभी फतेहोगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरो काम फते होगा

३.हे प्रच्छक तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ट आनेवाली है जीवकी चिंता और लाभ का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा होताहै और ये जो अब फिक्रहै खर्चसो दूर होगाआरामगुस्तवोभी मिलेगा फतै होगा कष्ट नष्ट होगा कई ग्रह नाम की रासपरनाकिसहैं सोउन ग्रहोंका उपाय बिधिपुर्वकपंडितसेकराओ बिनादानके करायेकार्यसिद्धदेरसेहोगाइसकारणचा वलमिष्टान्नस्वेतवस्त्र रजानित अर्थात् श्रद्धाप्रमाणचांदीदानका करनाबहुतश्रेष्ट हैमनकीकामनापूर्णहोगी अचानकला भकीसूरतहोगी चित्त स्थिरकरकेकिसी कालईश्वरका भजन कराकरोप्रश्न श्रेष्ट है अंजाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्टहै

४,हेप्रच्छकइससमयकेप्रश्नकायेफल हैकार्यआधीनसेवाहरअर्थातकामकाबू सेवाहरचिताकष्टकईजीवशत्रुतागुप्तकरे हैपरंतुउनसे कुछहोनहीं सक्ता१जीवमें चित्तबहुतरहताहैदशामध्यमकेकारण अनेकप्रकारकीहानवार्तालाप सोचोहो समुद्रकीलहरसीउठती है नईनईवातका चितवनहोकरनिर्फल होताहै कईफिक्र भारीलगेहुवेजीवकीप्राप्तिहोगीफतेऔर चंगाहोगाओरयेजो अबाचिंताहैसब दूर होपीतदानकरोचनेकीदालहलदी पेला वस्त्रपेलेपुष्पसुवर्णश्रद्धाप्रमाणगुप्त चिंता दूरहोगी कार्यफतेहोगा मनवांछितफल प्राप्तहोगादशान्यूनकेकारणफिक्रचिंता गृहमेंक्लेशहोताहै अबदशाश्रेष्ट आने वाली हैयेकार्यहोकरनवीन कृत्यकरोगे ॥

५. हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपीक ष्टका है खर्च विशेष जीवकी लालसा जीव चिंता तरह २ उद्वेग चित्त स्थिर नहीं काम का बूसे बाहर है दूसरे आदामियों को भी बहु त फिक्र है जब दशा मध्य में होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगी परंतु पापग्रहों का पूजन विधिपूर्वक बटुकभैरव का मंत्र भी जपवाओ (मंत्र) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्री बटुकभैरवा य आपदुद्धारणाय सर्वविघ्ननिवार्णायम मरक्षा कुरुकुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से मनोकामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूरे होते हैं नई २ वार्ता का चितवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

६. हे मच्छक कामना पूर्णहोगी खुशी कीवार्ताहोनेवालीहै मिलेगा मजींकेमा फिक्र कामहो चित्त उस विना व्याकुल साग्हताहैदशा न्यूनकेकारण ऐसेकाम हुए धन का खर्च जीवकादुख काम दूसरेके काबूमें होना और दो तीन गृह तुम्हारीरासपैकेडेहैं मध्यमहैं पंचागमें देखो उनमध्यमग्रहोंका पूजनदानमंत्र स्थिरचितकरके कराओकार्य शीघ्र सिद्ध होगा और येजो फिक्रहै सोदूरहोगा और कई फिक्र खर्चके आवेंहैं सो काम सिद्धहोंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति होगी परंतु विलम्बहै पूजनदानसेकार्य सिद्धहोगा गुप्त लाभहोगा अब अंजाम अच्छा दीखैहै कार्यमें भी लाभ होगा शिवजी का पूजन नित्य किया करो

७, इससमयके प्रश्नका फलयेहैकिका
मठीकबैठेगायानबैठेगाइज्जतका भय
होजाताहै ऐसीदशामेंगवन भीहोता है
गुप्तचिंतारहेहै कभीचित्तमेंकुछआताहै
कभीकुछआताहैऐसीदशामें खर्चाविशे
षहोताहैएकगुप्तमनोर्थहैसोकबतकआ
रामहोगासोअब न्यूनदशाबीचनेवाली
हैऔरश्रेष्टआनेवालीहै परन्तकाममेंदेर
हैइष्टदेवकापूजनकरानाचाहियेपित्रों के
निमितमिष्टान्नवस्त्रकच्चा दूध पीपलको
जलदेनाश्रेष्टहैकईमहीनेसेभाग्यकीही
नतायानीमध्यमहैपूजनकरनेसेधनकी
प्राप्तिजीवकामिलना कष्टरूपी रंजका
दूरहोना येजो अब बहुतचिंता है काम
जरादेरसे मर्जीकेमाफिक होगा काम
काबू से बाहर होगया दशा मध्यम. है

८. हेप्रच्छकतुम्हारी रास पै आजकल कईग्रहना।किसहैं पंचांग खोलकरदेखो जबऐसेग्रहरासपेआतेहैंलाभकमहोती हैशत्रुउत्पनहोतेमित्र व प्यारोंसेजुदाई होतीहैकष्टरंजहोतेहैं आमदनीहोती २ रुकजातीहैजहांपूर्णलाभसमझोअधूरा होताहैएकजीवलालसाआसलगीरहे है क्यैदीर्घलाभमध्यमहो कामहोनेकोहो फिरतारभंगहोजाहैसोअबमध्यमग्रहों केदानजापकराओ आपभीयेमंत्रजपो ऊँऐंह्रींक्लीं श्रीवासुदेवायनमः वटुकभैर वायआपदुद्धारणायममरक्षा कुरुकुरुस्वाहा दानमंत्रजापकरनेसेयेजातुम्हारेमनकी कामनाहैपूर्णहोगीप्राप्तहोगीकष्टदूरहो पुत्रोंकी लाभराजसफतेमित्रसेप्रीतविशेष इतनेउपायसेबनेगादशा मध्यमरहेगी

६. हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है अब दशा श्रेष्ट आनेवाली है कामना पूर्ण होगी जो काम चित्त में धारण करा है सो मिलेगा चिंता दूर होगी काम फतै होंगे मित्रों से प्रीत और कष्ट पीड़ा नष्ट होगी जो विचारा है काम ठीक बैठेंगे दशा बहुत दिनों से मध्यम थी अब विशेष हुवा जीव की प्राप्ति होगी रिण की न्यूनता होय प्रश्न श्रेष्ट है उद्योग व उपाय पहले तुमने बहुतेरे करे पर निर्फल गये काम का वृसेवा हर है पर अब ईश्वर आनन्द खुश खबरों की वार्ता करेंगे गुसंलाभ होय जो प्रश्न विचारा है इसके वास्ते श्री देवी दुर्गा लक्ष्मी का पूजन कराओ चावल चांदी स्वेत वस्त्र श्वेत फूल का दान कराओ कई ग्रह मध्यम हैं सो उपाय करने से शीघ्र मन की कामना पूर्ण होगी एक जीव का ध्यान रहता है

१०हेप्रच्छककामकावुम बाहरहै और घनकाव्यैविशेषहैअकस्मातयेमामलाहै सोजीवकीचिन्ताहैओरआदमीको भी चिंताबहुतहैइज्जतकाख्यालहैबडरखर्च दीखेहैंओरतुमपरउपकारीसत्यवार्ताको पसंदकरोहो छलछिद्रके कामकोपसंद नहींकरतेतुम्हाराप्रश्नजीवओर धन का हैऔरइज्जतकाभयहोताहैअनेकप्रकार कीवार्तासोचोहो निर्फलजाती है पता नहींलगताजतनभीकरेअबनवग्रहोंका दानमंत्रजापकराओयेकामईश्वरचाहे तोठीकहोनेवालाहैओरआदमीभीसहा यताकरेंगेकईशत्रुहैंग्रहइष्टदेवकापूजन कराने से काम मनइच्छा पूर्ण होगा और मिलेगा वंश की वृद्धि होगीजी- व लक्ष्मी प्राप्त होगा आराम होगा

११.हेप्रच्छकइससमयकेप्रश्नकरनेका
येमामलाहैस्वरदुस्वभावहैघरमेंचमत्का
रीहोक्लेशमिटेव्याधाटलेजिसकाप्रश्नहै
वोशैमिलेगीयानमिलेगीमंगलाचारकद
तकहोगा लाभखुशीकबतकहोगी।ऐसी
दशाकबतकरहेगी जीवकीचिंताहै बंश
कीवृद्धिहोआजकल तुमसोचोहो कुछ
होयहैकुछ दोतीनग्रहरासपैना।किसआ
रहेहैंसोउनकाउपायदानपुन्यजापकरा
नेसेचित्तकामनोंथसिद्धहोगा खुशीहो
कामपरायेआधीनहैअबतुमचींटीनाल
जिमाओतोश्रेष्टहैभूखोंकोभोजनदोका
र्यसिद्धहोगादशाउतरनेवालीहै मनोर्थ
पूर्णहोंगेअनेकप्रकारकीलाभकीसूरतहो
औरयेजो ऊपरसे फीके दीखेंहैंसोसब
कांटासा निकलजायगा दशामध्यमहै

१२. इसस्वयजो आपनेप्रश्नकियाहै ऐसेस्वरमेंयेवातहै किगुप्तचिंता१जीव कीलालमेबनीरहतीधनसेहीसारेकार्य सिद्धहोंहैं रोजगार मेंमध्यमलाभहैसो पासहोगीयानहीं।मंगलाचारकीसूरतक मेलकहोजिससे घरमेंचांदनाहोआराम होकवतकादिनकेडेहैंगुप्तलाभभी होगी येझगड़ाकवतकामिटेगादिनरात।चित्तमें चिंताक्लेशरहेहैकवतकदिनअच्छेआवेंगे येप्रश्नब्राह्मणकोदही लड्डूमिष्टानभोज नदेनेसेकामहो अपनेइष्टदेव कापूजन घरमें पित्रपीड़ाका उपायकरोउपायके करानेसेअबकेकामसिद्धहोइज्जतबढेगी सबसेजीतोगेश त्रुरूपीग्रह हानकररहेहैं दिनरातनईनईवातासोचोहोसबनिष्फल जातीहै परन्तु अंजाम कुशलता है ॥

१२ इससमयके प्रश्नकायेफलहैजीव चिंताभविष्यति घनन्यूनंदिनेदिनेमंग लाचारंविलम्बस्यपराधीनकृत्ययोराज द्वारकंन्यायंस्थिरोकार्यद्रष्टय:ग्रहपीडा चप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषित:मध्यमद शामेंमध्यमकार्यहोजातेहैंमनकीवार्ता कबतकपूर्णहोगी मिलेगीयानहीं रोज गारकीहानीहै कबतकबृद्धिहोगीआज कलदिननाकिसहैं घरमें चांदना कब तकहोयेकामअबकेभीफतहहोगाजिस सेवंशकीव्रद्धि हो तुम्हारीरासपैकईग्रह मध्यमहैपत्रादेखोनाकिसग्रहोकादान मंत्रजापछायादानकरानेसे अबयेमनो र्थसिद्धहोगाकामकाबूसेबाहरहैमामला ईश्वरकेआधीनहै परन्तुजोबातचित्तमैं औरहैयेगृहकाप्रभावहै अन्तअच्छाहै

१४ हेप्रच्छक तुम्हारा प्रश्न जीव की चिंताकाहैकाम पराधीन काबूमेंबाहर होगया बहुतरेयत्नकरोहो बहुतेरीबातें सोचोहो मंगलाचार खुशी।बंशकीवृद्धि राजद्वाराविद्याकी।सिद्धिधनकीजीतश्रेष्ट दशामेंहोतीहै अबजोतुम्हेयेचिंताऔर लालसा जीवकीहै सो काममेंविलंबहै परंतुमिलेगाऔरहोगापरंतुजतनउपाय सेइच्छापूर्णहोगी।घरमेंस्वप्नभी दीखेहै आरामकी सूरतहोगी जीवप्राप्तिहोगी इज्जतकाकामहो संदेहमिटेगा धनका मनोर्थपूर्णहोगा देवीका पूजनकराओ औरअपनेहाथसे घ्रतखांडचावलचांदी कादानकरोईश्वरचाहेतोउपायकरतेही इच्छापूर्णहोगी औरतुमपरउपकारीहो सत्यवादीहो असत्यकोपसंदनहींकरते

१५. हेपच्छकाचित्तचिंताभविष्यातगृ
हक्लेशनसंशयःधनमानमहानिपीडा
देहदीर्घतामंगलाचारकंयोगवंशवृद्धिच
प्राप्तयेराजद्वारकंन्यायंधनहानिविलंब
ताप्रश्नकाफलयेहैतरह२कीवार्तालाभ
सोचोहोकामकाबूसबाहरहै दशाकईम
हीनेमेमध्यमहैन्यूनदशामेंधनहानिवि
षशव्ययलाभमध्यमाचिंताक्लेशनुकसान
होतेहैंराजद्वारमेंभीकाममर्जीकेमाफि
कनहींहोतेसोकामकवतकहोगाजाघर
मेंचांदनाचमत्कारीहोवंशकीइज्जतकी
वृद्धिहोऔरवोमिलेएकजीवमेंचित्तविपे
शरहताहैसोशिवजीकापूजनचींटीनाल
देनाश्रेष्ठहैऔरअपनेहाथसेगुड़गेंहूलाल
वस्त्रलालपुष्पआदिदानकरकेईश्वरचा
हेतोअवकामशीघ्रहोकामनापूर्णहोगी

१६३ हे प्रच्छ्यगुप्तचिंताशरीरेनधनहानी चदृश्यते गृहपीडा भविष्यति दृश्यते भाग्यमंदताजीवाचिंताचप्राप्तोतिमगला चारहर्षकंधननष्टनसंदेहोजीवप्रश्नेचप्रा प्तयेइससमयदुसुभावस्वरहैइसमेंभाग्य कीवृद्धिवंशकीवृद्धमंगलाचारराजद्वार मेंन्यायकिसीप्यारेकीचिंताविद्याकाला भरोजगारकत्यपीडाकायत्नदुस्वभाव स्वरमेंइसप्रकारप्रश्नहोतेहैंसोतीन ग्रह तुम्हारेर सपैआजकलनाकिसहैपत्रेमें देखोनाकिसहैंयानहींजरूरहैंइननाकि सग्रहोंकादानमंत्रजापकराओ जिससे भाग्यकीवृद्धिकानालाखुलेऔरउच्चपद वीमिलेऔरयेजीवकीपसीकेमंगलाचा रकेकामहोंऔरगुप्तगईहुईचीजप्राप्तहो अंजामकुशलहैजिसेचाहोसो मिलेगा

१७. हेप्रच्छकतुम्हाराप्रश्न जीवरूप लक्ष्मीकाहै चिंतादीर्घहैऔर स्वरदुस्व भावहैप्रश्नदोतरहकेसेहैंएकशैका अल गहोजाना रोजगारमध्यमहोना चित्त कीचिंताचित्तमेंही समाजाती है घरमें अंधेरासाहै जीवकीलालसःहैजतनभी करेपरन्तुव्रथागएगुप्तचिंता इज्जतका ख्यालहै औरयेख्यालहैअबकेभीकाम होगाराजद्वारकाउच्चपदवीकी आशा हैअबचिंताइसप्रश्नकीहैसोकाम ईश्वर आधीनहैदिनबहुतसमयसे मध्यम है भाग्यउदयहोनेकोहोताहैफिररुकजाता हैअबपूजनश्री दुर्गादेवीकाकरानाचाहि येकईग्रहरासपकेडहैं उनकाउपायकरा नाचाहियेकामफतहहोकष्टबाधनष्टहो लाभकीसूरतअच्छीबनेगी वो मिलेगी

१८.हेप्रच्छकदीर्घ।चिंताचप्राप्नोतिजीव
प्राप्तिनदृश्यतेभयभीतहृदादृश्यपराधी
नोपिकृत्ययाराजद्वार कंकार्येधनव्यय
भविष्यतिअंतकार्यमहासिद्धिभृगुणाप
रिभाषत:तुमपैवहुनदशान्यूनथीअनेक
प्रकारकेफिक्र जीवाचिंताधनका जाना
गुसक्केशरहा तुम्हाराचित्तएकजीवमेंत
त्परहैनईनईवार्तालाभसोचाहासोव्रथा
जातीहैअवरोजगारकीभी सूरतहोगीय
जोजीवकीलालसाहै पूर्णहै परंतुविलंवहै
देरसेफतहहोगाकाममेंलाभहोग छाया
दानगुड़गेंहूंलालवस्त्रसुवर्णदानसे शीघ्र
मनकीकामनापूर्णाहोगीऔरदूसरालाभ
काकार्यभीसिद्धिहोगा कामदेवकीउन
मत्तामेंनीचवुद्धिहोजातीहै सोग्रहकाप्र
भावहैअंजामकुशलभूमि लाभ होगा

१९.हेप्रच्छक तुम्हारा काम काबू से
बाहरहै दिनरातविचित्रतरहरकीवार्ता
लाभसोचोहोबनकरकामकीआनन्दकी
सूरत मध्यमसीहोगई ऐसीदशामेंगुप्त
चिंताशत्रुकाचित्तमेंभयसाधनकाचला
जानामित्रकाख्यालरहताहैरोजगारका
मध्यमहोनाकष्टव्याधाहोखोटीदशामें
बहुतबातोंकाख्यालहोताहै तुमपक्षियों
कोअन्नबाजराभोजनदोश्री बटुकभैरव
कापूजनकराओयेमंत्रजपोउँऐंह्रीक्लींश्रीं
श्रीबिष्णुभगवानममअपराधक्षमायकुरु
कुरुसर्वविघ्नविनाशायममकामना पूर्ण
कुरुकुरुस्वाहामंत्रकेकरानेसेवंशकीबृद्धि
होतीहैरोजगारश्रेष्टहोताहैजीवकीप्राप्ती
होतीहैराजद्वारसेफतैहोतीहैगईहुईलक्ष्मी
फिर आतीहै सर्वकामना सिद्धहोतीहै

२०.हेप्रच्छक तुम्हारा काम फतैहोगा स्वरदाहना चलताहै इससमयकेप्रश्न कायेहफलहै चिंताफिक्रमिटगा गईसो गई अवराखरही जिसनेउत्पन्नाकियाहै देगावहीजीवकीप्राप्तिहोगीराजद्वारसे लाभहोगाखुशीहोगीमंगलाचारहोगा एकमित्रमेंविशेषमनरहेहैआधीनरहेगा भूमिलाभहोगादशाबहुतदिनसेमध्यम थीअबदशा बदलनेवालीहै कामदेवकी प्रबलतामें न्यून बुद्धिहोजातीहै जबजो तुम्हारीरासपै ग्रहमध्यमहैंउनकादान निश्चैकरकेकराओ कामहोताहोतारुक जाताहेश ग्रहानिकरातेहैं काम औरके आधीनहै कई आदमियोंसे मिल के कामहोगा अबदशाअच्छी आनेवाली है येजो और कामहे सोवहभी होगा

२१. हेप्रच्छकप्रश्नजरामध्यममालूम
होताहैपुत्रकीलाभसगाईरोजगारमध्य
मदशामेंमुशाकिलसेहोतेहैंअर्थातूहोतार
लाभरुकजाताहैधनकानुक्सानधनहर
नहोताहैराजद्वारसेफतेहोनामुशकलहो
जाताहैउच्चपदवीनहींमिलतीजीवकी
प्यारेकीचिंताहोजातीहै जोकामसोचो
तारभंगहोजातीहैगुप्तशत्रुभांजीमारदेते
हैंएकमनोर्थ बहुतादिनसे सोचरक्खाहै
ईश्वरचाहेतंवहोअवतुमइष्टदेवऔरघरके
पित्रोंनिमित्तकुछजपदानकराओजिस
सेमनोर्थसिद्धहोजिसकीचाहनाहैवोमिले
जीवकीप्रासिहोरोजगारभारीहोराजद्वा
रसेफतेहो गईचीजमिलेमंगलाचार हो
इतनेपूजननवनेगाकोईकार्यदुरुस्तनहो
गा काममध्यमरहेगा अन्तमेंकुशलहै

२२. हे प्रच्छक अब तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा श्रेष्टदशा आने वाली है उत्तम दशा गई चीज का मिलना रोजगार में लाभ अन्न से लाभ जीव की प्राप्ति राजद्वार में फतै घरमें मंगला कष्ट्य धान्य द्रव्य में लाभ और मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अब तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और बाकी हैं पत्रा देखो उन का जरा उपाय और श्रद्धा से करादो और श्याम को चींटिनाल जब तक बने तब तक दो दशा उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत फिक्र से बीचे सो अब ईश्वर चाहे काम पूर्ण होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ एक जीव में चित्त विशेषकर रहता है सो आनन्द में बीतेगी काम देव की उन मत्तता में बुद्धि न्यून भी होजाती है

२३. हे प्रच्छक अब क्या फिक्र करता है तुम्हें खुशखबरी होनेवाली है ईसो गई अब रखर ही अब बहुत देना बढ़ी मनोर्थ पूर्ण होंगे परन्तु एक फिक्र भारी लीखे है ऊपर से खर्च आवे है पास धन विशेष नहीं दीखता परंतु चिंता मत करना काम बड़ा इज्जत के साथ बनेगा और कई जगह से लाभ होगा करनेवाला औ है वही फिक्र कर रहा है अब विशेष लाभ की सूरत होगी मित्र में चित्त बहुत रहना है व भी चित्त से प्यार करे है अब तुम शीघ्र इस काम की सिद्धि चाहते हो तो श्री गंगाजी के ५ ब्राह्मण जिमाओ और सट्टे चावल दक्षिणा दान करो काम शीघ्र फते होगा और गुप्त लाभ होगा घर में चांदना होगा एक काम गुप्त से गुप्त न किसी बना था सो ईश्वर का ध्यान रक्खे करो

२४.हेप्रच्छकतुमपर बहुतदिनोंसेदशा नाकिसथीनहींतो निहालहोजातेलाभ कोमरनमेंहानपैदा होगईगुप्तशत्रुबुराई करेहैअबएकऔरखुशीकीबाततुम्हेंहोने कोहोरहीहैदशानाकिसमें धनमालका निकलजानापीडाका घरमें बासहोना इज्जतकाभयहोना रोजगारमेंहानहो नाहुवाहुवाया मंगलाचारका हटजाना राजद्वारकीचिंताहोनी येसबबातनाकि सदशामेंहोतीहैंअबतुमशामकोघृतका दीपकशिवजीके मंद्रमें प्रज्वलितकरो औरजलकालोटाभरकेशिवजीकोऔर पीपलकोदो औरइतवारको ब्राह्मणाजि माओकईग्रहतुम्हारीरासपरनाकिस हैं पत्रेमेंदेखोसोनाकिसदशाका फलन्यून होजायगाजोमनोकामनाहै पूर्णहोगी

२५.हेप्रचछकअबतुम्हारेखोटे दिनगये
अच्छेआने वालेहैं अबतक तुमनेबहुत
नाकिसदशाझली नाकिसदशा में ही
ऐसेकामहोतेहैं जोकिफकतुमपरहैं बहुत
नुकसानउठायालाभकमरहापीड़ारूपी
क्लेशमें धनखर्च औरचीज निकलगई
इज्जतकाभयहुवापरन्तु अबअपनेइष्ट
देवकापूजनापितृपीडाकाजतनऔरकूर
ग्रहकादानानिश्चकरकेकराओफिरशीघ
औरनयेलाभहोंगे जीवकीप्राप्ति मित्रसे
मुलाकातजोहैविशेषहोगीघरमेंमंगला
चारउच्चपदवी प्राप्तहोगी ग्रहकीपीड़ा
नष्टहोगीशत्रुकानाश औरयेजोमनकी
कामनाहैसो पूर्णहोगी औरवहेड़रफिक्र
जोऊपरसेखर्चकेदाखेहैसोसबआनंदमें
कांटासानिकलजायगाकामसिद्धहोगा

२६.हेप्रच्छक प्रश्न इससमयकाबहुत श्रेष्ठतुम्हारादीखताहै बुरेदिनगयेअच्छे आनेवालेथे सोतुम्हारीरासपैदोतीनग्रह मध्यमआगयेऔरतुमनेउनकादानजप करायानहीं इसकारण ऐसेफिक्रचिंता झलीलाभकमरहाखर्चविशेषहैपीडाकी चिंताचित्तमैंभयसाहोनाकामउम्भाला भकाअभीनहींबनाजीवकीचिंताहैवर्ग कीवृद्धिकोमंगलाचारहोनाएकअपना प्याराहैउसेमैंचित्तबहुतरहताहै राजद्वा रकी चिंता अवछायादानऔरचनेकी दालपेलावस्त्र हल्दीस्वर्णदानकराओ ईश्वर चाहतो मनकीकामना पूर्णहोगी उच्चपदवीमिलेगी जीवकी प्राप्तिलाभ बढे भूमिसेलाभ पीडा नष्ट होगीऔर राजद्वार सेभी काम में फतह होगा

२७.हेप्रच्छक प्रश्न मध्यम है अभी तुम्हारीमर्जीमाफिककामहोनेमें देरहै कष्टरूपीरंजक्लेशाचिंताबहुत रही काम होताहोतारुकजावेहैयेमध्यम दशाका फलहैकहींगवनहोताभी ताज्जुब नहीं एकमित्रसेप्रीतबहुतहै एकशत्रुगुप्त है अबउसकामिलनाकठिनहैमंगलाचारमें देरहैएकजीवकीभीअबलाषाहैअबतुम नवग्रहका पूजनदान करोदशा न्यून बदलेगीश्रेष्टआवेगीसो सब कामउत्तम होंगेजीवकालाभगईहुईचीजफिरआवे गीकष्टबाधानष्टहोगीउच्चपदवीमिलेगी राजद्वारसेकामसिद्धहोगागुप्तचिंतामिटे गीचित्तमेंअनेकप्रकारकीवार्ताचित्तवन करतेहोचित्तकीवार्ताचित्तमेंसमाजाती है अबखुशीकी वार्ता सुननेमेंआवेगी

२८. हे पृच्छक जब दशा जीव पै नाकिस आती है और ग्रह चौथे आठवें बारहवें होजाते हैं तब ऐसे काम होने हैं खर्च विशेप लाभ कम और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है सो आराम मिलेगा और हाथ से निकला धन देर से प्राप्त होगा जिस काम को करना विचारा हो समझ के करना अभी भाग्य उदय होने में किंचित विलम्ब है एक मित्र में बहुत मन रहता है सो उससे प्रीत बढ़ेगी और मिलेगा नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हारे नाम की रास पै कैड़े हैं उनका पत्रा देखकर यत्न कराओ नहीं तो विशेप क्लेश होगा दुख हो ग्रहों का यत्न होते ही आराम होगा उच्च पदवी होगी काम में फायदा हो एक जगह से विशेप माल मिलेगा विलंभ से खातर जमा रक्खो ईश्वर का भजन करा करो भूलो मत

२६.हेप्रच्छकतुह्मारीबुद्धिश्रमैंगारहती हैईश्वरकोसत्यनहींमानतेजिसनेइतना वड़ाकियाहै और बराबर रक्षा करी है सोवहकहींचलानहींगयाहै बराबररक्षा करेगा उस का भजन करो. अन्त में आसा पूरणहोगी और गईसोगई अब राखरही औरवो मिलेगा मौजूदहैचिंता मतकरो आगमकी सूरतहोरहीहै एक काममेंविशेषलाभहोगा परंतुअबमंगल केवर्त और पक्षियोंको बाजरा भोजन डाल दिया करो वड़ा पुन्यका कामहै क्रूरग्रहोकाजपदान करातेरहाकरो मन वांछितफलमिलेगा कार्जसिद्धहोंगे जो बडेखर्चकेकाम समझरक्खेहैं कांटासा आनन्दमें निकल जायगा कामदेवकी उनमत्ता में बुद्धि न्यून होजाती है

३०. हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमनेजो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत और आराम की सूरत नजरआतीहैपिछलेसालमहीनेमध्यम रहे खर्च विशेष आमदनी न्यून अब भाग्यउदयहोगा और कामफतह होगा थोड़ा बिलंब है लाभकी सूरत होकर हटजातीहै ईश्वरका स्मण चित्त लगा करकरो और घृत सांभर दानकरो अब नये सिरेसे आनन्द का प्रबन्ध होगा एक काम तुम से न्यून बनगया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुतसी प्राप्तिहोगी नवीननवीन वार्ता की समुद्रकी तरंगसीचित्तमें उठतीहै

३१.हेप्रच्छककाम तुम्हारेमें विलंबहै कामअभी ठीकनहोगा देशा नाकिमहै कईग्रह नाकिसहैं पंचांगखोलकर देखो सोचोहोकुछहोहैकुछकईबातकीचिंता हैजीवकीधनकीमंगलाचारकोकष्टरूपी क्लेशकीपरंतुतुम सतवादीहोसरगवोलने कोपसंदकरतेहोझूंटसेक्रोधितहोतेहोपरा येकाममेंमनसेप्रीतलगाकेकरतेहोकिसी कावुरानहींचाहतेतुम्हेविद्याकमहैपरतुं बुद्धिअकलबडेविद्वानोसेविशेषहैहरएक कीवातकोझूटसत्यकी परीक्षा समझलो होएककामन्यूनवनगयाथासोईश्वरकी भक्तिविशेषकरोश्रीगंगाजीके५ब्राह्मण खीरखं डकेजिमाओमनवांछितफललाभि लेगालाभहोगामंदिरपेरडाजे फिकरमतक्ष रक्खाहै सवकामआनंदमें होजायगा

३२ हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न शगुण इसवक्त बहुतश्रेष्टहै तुम्हे बिना कार्ण चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न होजाताहै बुद्धिभ्रमणहोजातीहै गयासोगयाफिर आवेगा मिलेगा क्या मिलेगा आराम मिलेगा धनामिलेगा मंगलाचार होगा पीडाकानाशहोगा जीवकोखुशीहोगी अकस्मात खुशखबरीहोगी अपने इष्ट देव पित्रदेवताके निमित्त वस्त्र मिष्टान्न कच्चादूध मावश्याको पिलातेरहाकरो रोजगार बढेगा उच्च पदवी पाओगे एकजीवकाध्यान मित्रकेध्यानमेंचित्त बहुतरहताहै तुम्हे विद्यामध्यमहै परंतु अकलबुद्धितेजहै किसीकाबुरा नहीचा हतेसत्यवार्ताको पसन्दकरतेहो खर्चहै अंजाम कुशलहै राजद्वारसेअन्तफतेहै

३३हेप्रच्छक येजोतुमने प्रश्नकियाहै जोहोगयासोहोगया अबखुशीकीवार्ता होनेवालीहै खोटेदिनगये श्रेष्टआनेवाले हैंआरामहोगाकारजफते होगाजिसकी चाहनाहैमिलेगाऔरयेजोचित्तमेंकाम बिचाराहैदेरसे होगा दिनतुमकोबहुत दिनोंसे मध्यमहैं माजिकेमाफिकलाभ नहींहैनष्टदशामेंरजक्लेशपीड़ागुस्साचिंता शत्रुताहोतीहैमोअपनीरासपै जोदोतीन ग्रहनाकिसहैंदानमंत्र जपाकरो तबघर में आनन्द मंगलाचार जीवकी प्राप्ति यात्रासे लाभ काम फतैहोंगे गुप्तप्राप्ति होगी तुम्हारेशरीर पै ब्रणयानी फोड़े फुंसी का निशान है आलस्य रहताहै नई नई बात का चितवन करते हो

३४ हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिसाफिक्रसे गुजरे और खर्च विशेषलाभ मध्यम सोअबप्राप्तिहोगी जीवकालाभहोगा व्याधा रंजनष्टहोंगे घरमें खुशीहोगी।चित्तकीचिंता।चित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसीनई नई उठतीहैंसोव्रथाजातीहै एकजीवमें।चित्त बहुतरहताहै अबईश्वर चाहेतो कहींसे खुशीकी बातसुनोगे उच्चपदवी प्राप्तहो गी। नाकिसग्रहोंकादान औरसेवेश्याम शिवजीका भजनकरेकरो और येजो प्रश्नकिया है वो काम भी फतैहोगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

३५ हेप्रच्छकतुम्हारा कार्यसिद्ध होगा प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ट आनेवालीहै जीवकी चिंता औरलाभ का उद्योग विशेष परन्तुलाभ अधूरा होताहै और येजो अबफिक्रहैखर्चसो दूरहोयगाआरामगुप्त वोभीमिलेगाफतै होगा कष्टनष्ट होगा कईग्रह नामकी रासपरनाकिसहैंसोउन ग्रहोंका उपाय बिधिपूर्वकपंडितसेकराओ बिनादानके करायेकार्यसिद्धदेरसेहोगाइसकारणचा वलमिष्टान्नस्वेतवस्त्ररजानित अर्थात् श्रद्धाप्रमाणचांदीदानकाकरना बहुतश्रेष्ट हैमनकीकामनापूर्णहोगी अचानकलाभकीसूरतहोगीचित्तस्थिरकरके किसी कालईश्वरकाभजनकराकरो प्रश्नश्रेष्ट हैं अंजाम कुशलहैं तीर्थयात्रा श्रेष्टहै

३६के प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यें फल है कार्य आधीन सेव. हर अथ. तू काम का मूं सेबा हर चिंता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त करें है परंतु उनसे कुछ होनहीं सक्ता १ जीव में चित्त बहुतरह तो है दशा मध्यम के कारण अनेक प्रकार की हानि वार्ता लाप सोचो हो समुद्र की लहरसी उठती है नई नई बातका चितवन होकर निर्फल होता है कई फिक्र भारी लगे हुवे जीव की प्रसिद्ध गी फते और चंगा होगा और ये जो अब चिंता है सब दूर होपी तदान करो चनेकी दान हलदी पेला वस्त्र पेले पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्त चिंता दूर होगी कार्य फते होगा मनवांछित फल प्राप्त होगा दशा न्यून के कारण फिक्र चिंता गृह में क्लेश होता है अब दशा श्रेष्ट आने वाली है ये कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

३७इष्टप्रच्छकतुम्हाराप्रश्नचिंतारूपीक
ष्टकाहैखर्चाविशेष जीवकीलालसाजीव
चिंतातरह २उद्वेगचित्तस्थिरनहींकाम
काबूमेंबाहरहैदूसरेआदमियोंकोभीबहु
तफिक्रहैजबदशामध्यमहोतीहैअपनेभी
परायेहोजातेहैंपरंतुअभीकार्यमेंविलम्ब
हैकामनापूर्णतोहोगा परंतुपापग्रहोंका
पूजन विधिपूर्वकबटकभैरवकामंत्रभी
जपावाओ[मंत्र]उँऐंह्रींक्लींश्रींबटुकभैरवा
यआपदुद्धारणायसर्वविघ्ननिवारणायम
मरक्षांकुरुकुरुस्वाहा। इसमंत्रकेजापसे
मनोकामनापूर्णहोगीऔरयेजोचित्तको
दीर्घचिंताहैसोकामहोऔरमिलेगाखर्च
विशेषहैएकजीवमेंचित्तभीबहुतरहताहै
लाभअधूरहोतेहैंनई२वार्ताकाचितवन
रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

३८हेप्रच्छक कामना पूर्णहोगी खुशी
कीवार्ताहोनेवाले है मिलेगामाजैकेमा
फिक कामहो चित्त उसबिनाव्याकुल
सारहताहै दशान्युनकेकारण ऐसेकाम
हुए धन का खर्च जीवकादुख काम
दूसरेके काबूमें होना औरदोतीन ग्रह
तुम्हारीरासपैकैड़हैं मध्यमहैंपंचांग में
देखोउनमध्यमेंगृहोंका पूजनदानमंत्र
स्थिरचित्त करकेकराओकार्यशीघ्र सि
द्ध होगा और येजो फिक्रहै सोदूरहोगा
औरकई फिक्र खर्चकेआवैंहै सो काम
सिद्धहोंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति
होगी परन्तु विलम्बहैपूजनदानसेकार्य
सिद्धहोगागुप्त लाभहोगाअब अंजाम
अच्छा दीखहैं कार्यमें भी लाभ होगा
शिव जी का पूजन नित्य किया करो

३९ इससमयकेप्रश्नका फलयेहै किका
मठीकेबैठगायान बैठगाइज्जनका भय
होजाताहै ऐसीदशामेंगवनभीहोता है
गुप्तचिंतारहेहैं कभीचित्तमेंकुछआताहै
कभीकुछआताहैऐसीदशामें खर्चाविशे
षहोताहै एकगुप्तमनोर्थहैसोकइतकआ
रामहोगासो अवन्यूनदशावीचनेवाली
हैऔरश्रेष्टआनेवालीहै परन्तुकाममेंदेर
हैइष्टदेवकापूजनकरनाचाहिये पित्रोंके
निमितमिष्टान्नवस्त्रकच्चा दूध पीपलको
जलदेना श्रेष्टहै कईमहिनेसेभाग्यकीही
नतायानीमध्यमहै पूजनकरनेसेधनकी
प्राप्तीजीवका मिलना कष्टरूपीरजका
दूरहोना येजोअव वहुतचिंताहै काम
जरादेरसे मर्जीकेमाफिक होगा काम
कावूसे वाहर होगया दशा मध्यमहै

४०हेप्रच्छकतुम्हारी रासपै आजकल
कईग्रहनाकिसहैं पंचांग खोलकरदेखो
जवऐसेग्रहरासपैआतेहैं लाभकमहोती
हैशत्रुउत्पनहोते मित्र व प्यारोंसेजुदाई
होतीहैकष्ट रंजहोतेहैं आमदनीहोतीर
रुकजातीहैजहां पूर्णलाभसमझोअधूरा
होताहैएकजीवलालसाआसलगी रहेहै
व्यैदीर्घलाभमध्यसहै कामहोनेकोहो
फिरतारभंगहोजाहैसोअबमध्यमग्रहों
केदानजापकराओ आपभीये मंत्रजपो
ॐऐंह्रींक्लींश्री वासुदेवायनमःवबटुकभैर
वायआपदुद्धरणायममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा
दानमंत्र जापकरनेमे येजोतुम्हारेमनकी
कामनाहैपूर्णहोगीमासि होगीकष्टदूरहो
पुत्रोंकालाभराजसेफतैमित्रसप्रीतविशेष
इतनेउपायनबनेगादशा मध्यमरहेगी

४१.हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है जो होगया सो होगया अब खुशी की बातें होनेवाली है खोटे दिन गये श्रेष्ठ आनेवाले हैं आराम हो कारज फते होगा या जिसकी चाहना है मिलेगा और ये जो चित्त में काम विचारा है देर से होगा दिन तुमको बहुत दिनों से मध्यम हैं मर्जी के माफिक लाभ नहीं है नष्टदशा में रंज क्लेश पीड़ा गुप्त चिंता शत्रुता होती है सो अपनी रास पै जो दाती न प्रश्न किस है दान मंत्र जाप करो तब घर में आनन्द मंगलाचार जीव की साप्ति य त्रास से लाभ काम फते होंगे गुप्त प्राप्ति होगी तुम्हारे शरीर पै व्रण यानी फोड़े फुंसी का निशान है आलस्य रहता है नई नई बात का चिंतवन करते हो

४२. हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फिक्र से गुजरे और खर्च विशेष लाभमध्यम सो अब प्राप्तिहोगी जीवका लाभहोगा व्याधा रंजनष्टहोंगे घरमें खुशीहोगी चित्तकी चिंता चित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसी नई नई उठतीहैं सोवृथा जातीहैं एकजीवमें चित्त बहुतरहताहै अब ईश्वर चाहेतो कहींसे खुशीकी बातसुनोगे उच्चपदवी प्राप्तहोगी नाकिस ग्रहोंकादानऔरसुबेरशाम शिवजीका भजनकराकरो और येजो प्रश्न किया है वो कामभी फतेहोगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

४३.हेप्रच्छक तुम्हाराकार्य सिद्ध होगा प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ट आनेवाली है जीवकी चिंता और लाभ का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा होताहै और य जो अब फिक्रहै खर्चसो दूर होगाआरामगुसवोभी मिलेगा फते होगा कष्ट नष्ट होगा कई ग्रह नाम की रासपरनाकिसहै सोउन ग्रहोंका उपाय विधिपूर्वकपंडितसेकराओ बिनादानके करायेकार्यसिद्धदेरसेहोगाइसकारणचा वलमिष्टान्नस्वेतबस्त्र रजानित अथात् श्र द्धाप्रमाणचांदीदानका करनाबहुतश्रेष्ट हैमनकीकामनापूर्णहोगी अचानकला भकीसूरतहोगी चित्त स्थिरकरकेकिसी कालईश्वरका भजन कराकरोप्रश्नश्रेष्ट है अंजाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्टहै

४४, हेपरुछकइससमयकेप्रश्नका येफल हैकार्यआधीनसेबाहरअर्थातकामकाबू सेबाहरचिंताकष्टकईजीवशत्रुतागुप्तकरे हैपरंतुउनसे कुछहोनहीं सक्का१जीवमें चित्तबहुतरहताहैदशामध्यमकेकारण अनेकप्रकारकीहानवार्तालाप सोचोहो समुद्रकीलहरसीउठती हैनईनईबातका चितवनहोकरनिष्फल होताहै कईफिक्र मारीलगेहुवेजीवकीप्राप्तिहोगीफतेऔर चंगाहोगाऔरयेजो अबचिंताहैसब दूर होपीतदानकरोचनेकीदालहलदी पेला वस्त्रपेलेपुष्पसुवर्णश्रद्धाप्रमाणगुप्तचिंता दूरहोगी कार्यफतेहोगा मनवांछितफल प्र.प्तहोगादशान्यूनकेकारणफिक्रचिंता गृहमेंक्लेशहोताहै अबदशाश्रेष्ट आने वा ली हैयेकार्यहोकरनवीन कृत्यकरोगे ॥

४५. हेप्रच्छकतुम्हाराप्रश्नचिंतारूपीक
ष्टकाहै खर्चविशेपजीवकीलालसाजीव
चिंतातरह२उदवेगचित्तस्थिरनहींकाम
कावृसेबाहरहैदूसरेआदामियोंकोभीबहु
तफिकहै जबदशामध्यमहोतीहैअपनेभी
परायेहोजातेहैंपरंतुअभीकार्यमेंविलम्ब
है कामनापूर्णतोहोगी परंतु पापगृहोंका
पुजन विधिपूर्वक बटुकभैरवका मंत्रभी
जपवाओ(मंत्र)ऊँऐंह्रींक्लींश्रींवटुकभैर्वा
यआपदुद्धारणाय सर्वविघ्ननिवार्णायम
मरक्षाकुरुकुरुस्वाहा । इसमंत्रकेजापसे
मनोकामनापूर्णहोगीऔरयेजोचित्तको
दीर्घचिंताहैसोकामहोऔरमिलेगाखर्च
विशेपहैएकजीवमें चित्तभीवहुतरहताहै
लाभअधूरेहोतेहैं नईरबातीकाचिंतवन
रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

४९. इच्छक कामना पूर्णहोगी खुशी
कीबातहोनेवालीहै मिलेगा मजीकेमा
फिक्र कामहो चित्त उस बिना व्याकुल
साहनाहैदशा न्यूनकेकारण ऐसेकाम
हुए धन का खर्च जीवकादुख काम
दूसरेके काबूमें होना और दो तीन गृह
तुम्हारीरासपैकैडेहैं मध्यमहैं पंचागमें
देखो उनमध्यमग्रहोंका पूजनदानमंत्र
स्थिरचितकरके कराओकार्य शीघ्र सि
द्ध होगा और येजो फिक्रहै सोदूरहोगा
और कई फिक्र खर्चके आवेहैं सो काम
सिद्धहोंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति
होगी परंतु विलम्बहै पूजनदानसेकार्य
सिद्धहोगा गुप्त लाभहोगा अब अंजाम
अच्छा दीखहै कार्यमें भी लाभ होगा
शिवजी का पूजन नित्य किया करो

४७,इससमयके प्रश्नका फलयेहैकिका मठीकबैठेगाथा न बैठगाइज्जतकाभय होजाताहै ऐसीदशामेंभगवन्भीहोता है गुप्तचिंतारहेहै कभीचित्तमेंकुछआताहै कभीकुछआताहै ऐसीदशामें खर्चाविशेषहोताहैएकगुप्तमनोर्थहैसोकवतकआरामहोगासोअवन्यूनदशावीतनेवाली है और श्रेष्टआनेवाली है परन्तकाममेंदेर हैइष्टदेवकापूजनकरानाचाहियेपित्रोंके निमित्तमिष्टान्नवस्त्रकच्चा दूध पीपलको जलदेनाश्रेष्टहैकईमहीनेसेभाग्यकीही नतायानीमध्यमहैपूजनकरनेसेधनकी प्राप्तजीवकामिलना कष्टरूपी रंजका दूरहोनाये जो अव बहुतचिंता है काम जरादेरसे मर्जीकेमाफिक होगा काम कावू से बाहर होगया दशा मध्यम है

४८. हेप्रच्छकतुम्हारी रासपै आजकल कईग्रहनाकिसहैं पंचांग खोलकरदेखो जबऐसेग्रहरासपैआतेहैंलाभकमहोती हैशत्रुउत्पनहोतेमित्र व प्यारोंसेजुदाई होतीहैकष्टरंजहोतेहैं आमदनीहोती २ रुकजातीहैजहांपूर्णलाभसमझोअधूरा होताहैएकजीवलालसाआसलगीरहे है ज्येदीर्घलाभमध्यमहो कामहोनेकोहो फिरतारभंगहोजाहैसोअबमध्यमग्रहों केदानजापकराओ आपभीयेमंत्रजपो ॐऐंह्रींक्लींश्रींवासुदेवायनमः वटुकभैर वायआपदुद्धारणायममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा दानमंत्रजापकरनेसेयेजातुम्हारेमनकी कामनाहैपूर्णहोगीप्राप्तहोगीकष्टदूरहो पुत्रोंकी लाभराजसेफतेमित्रसेप्रीतविशेष इतनेउपायसेग्रहगादशा मध्यमरहेगी

४९. हेपरच्छकयेजो तुमने प्रश्नाकियाहै अवदशाश्रेष्टआनेवालीहैकामनापूर्णहो गीजोकामचित्तमेंधारणाकराहैसोमिले गाचितादूरहोगीकामफतैहोंगे मित्रोंसे प्रीतऔरकष्टपीडानष्टहोगीजोविचाराहै कामठीकहैठैंगेदशाबहुतादिनोंमेमध्यम थीव्यैविशेषहुवाजीवकीप्राप्ति होगीरिण कीन्यूनताहोयप्रश्नश्रेष्टहै उद्योगवउपाय पहलेतुमनेबहुतेरकरेपरानिष्फलगयेकाम काबूसबाहरहैं परअवईश्वरआनन्दखुश खबरांकीवातांकरेंगेगुसन्लाभहोयेजोप्रश्न विचाराहैइसकेवास्तेश्रीदेवीदुर्गालक्ष्मी कापूजनकराओ चावलचांदीस्वेतवस्त्र श्वेनफूलकादानकराओ कईग्रहमध्यम हैंसोउपायकरनेसेशीघ्रमनकी कामना पूर्ण होगी एकजीवका ध्यानरहना है

५० हे प्रच्छक काम का बूमें बाहर है और धन का व्यै विशेष है अकस्मात ये मामला है सो जीव की चिन्ता है और आदमी को भी चिंता बहुत है इज्जत का ख्याल है बडे २ खर्च दीखे हैं और तुम परउपकारी सत्य वार्ता को पसंद करो हो छलछिद्र के काम को पसंद नहीं करते तुम्हारा प्रश्न जाव और धन का है और इज्जत का भय होता है अनेक प्रकार की बातां सोचो हो निर्फल जाती है पता नहीं लगता जतन भी करे अब नवग्रहों का दान मंत्र जाप कराओ ये काम ईश्वर चाहे तो ठीक होने वाला है और आदमी भी सहायता करेंगे कई शत्रु हैं ग्रह इष्टदेव का पूजन कराने से काम मनइच्छा पूर्ण होगा और मिलेगा वंश की वृद्धि होगी जीव लक्ष्मी प्राप्त होगा आराम होगा

५१.हेप्रच्छकइससमयकेप्रश्नकरनेका
येमामलाहैस्वरदुस्वभावहैघरमेंचमत्का
रीहोक्लेशमिटेव्याधाटलेजिसकाप्रश्नहै
वोशैमिलेगीयानमिलेगीमंगलाचारकद
तकहोगा लाभखुशीकवतकहोगीऐसी
दशाकवतकरहेगी जीवकीचिंताहै वंश
कीवृद्धिहोआजकल तुमसोचोहो कुछ
होयहैकुछ दोतीनग्रहरासपैनाकिसआ
रहेहैंसोउनकाउपायदानपुन्यजापकरा
नेसेचित्तकामनोर्थसिद्धहोगा खुशीहो
कामपरायेआधीनहैअबतुमचौंटीनाल
जिमाओतोश्रेष्टहैभूखोंकोभोजनदोका
र्यसिद्धहोगादशाउतरनेवालीहै मनोर्थ
पूर्णहोंगेअनेकप्रकारकीलाभकीसूरतहो
औरयेजो ऊपरसे फीक दीखेंहैंसोसब
कांटासा निकलजायगा दशामध्यमहै

५२. इससमयजो आपनेप्रश्नकियाहै ऐसेस्वरमेंयेबातहै किगुप्तचिंता१जीव कीलालसाबनीरहतीधनसेहीसारेकार्य सिद्धहोंहैं रोजगार मेंमध्यमलाभहैसो प्राप्तहोगीयानहीं मंगलाचारकीसूरतक वतकहो जिससे घरमेंचांदनाहोआराम होकबतकादिनकैडेहैंगुप्तलाभभी होगी येझगड़ाकबतकमिटेगा दिनरातचित्तमें चिंताक्लेशरहेहैकबतकदिनअच्छेआवेंगे येप्रश्नब्राह्मणकोदही लड्डूमिष्टानभोज नदेनेमेंकामहो अपनेइष्टदेव कापूजन घरमें पित्रपीड़ाका उपायकरोउपायके करानेसेअबकेकामसिद्धहोइज्जतबढेगी सबसेजीतोगेशत्रुरूपीग्रह हानकररहेहैं दिनरातनईनईवार्तासोचोहोसबनिर्फल जातीहै परन्तु अंजाम कुशलता है ॥

५३ इसममयके प्रश्नकाये फलहैजीव
चिंताभविष्यति धनन्यूनंदिनेदिनेमंग
लाचारविलम्बस्यपराधीनंकृत्ययोराज
द्वारकन्यायंस्थिरोकार्यद्रष्टय:ग्रहपीडा
चप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषित:मध्यमद
शाँहैमध्यमकार्यहोजातेहैंमनकीवार्ता
कबतकपूर्णहोगी मिलेगीयानहीं रोज
गारकीहानीहै कबतकवृद्धिहोगीआज
कलादिनना किसहैं घरमें चांदना कब
तकहोयेकामअबकेभीफतहहोगा जिस
सेवंशकीवृद्धि हो तुम्हारीरासपेकईग्रह
मध्यमहैपत्रादेखोनाकिसग्रहोकादान
मंत्रजापछायादानकरानेसे अबयेमनो
र्थसिद्धहोगाकामकाबूसेबाहरहैमामला
ईश्वरकेआधीनहे परन्तुजोबातचित्तमें
औरहैयेग्रहकाप्रभावहै अन्तअच्छाहै

५४ हेप्रच्छक तुम्हारा प्रश्न जीव की चिंताकाहैकाम पराधीन कावृसेबाहर होगया बहुतरेयत्नकरोहो बहुतेरीबातें सोचोहो मंगलाचार खुशी।वंशकीवृद्धि गजद्वाराविद्याकीसिद्धिधनकीजीतश्रेष्ठ दशामेंहोतीहे अबजोतुम्हेयेचिंताऔर लालसा जीवकीहै सो काममेंविलंबहै परंतुमिलेगाऔरहोगापरंतुजतनउपाय सेइच्छापूर्णहोगी।घरमेंस्वप्नभी दीखेहै आरामकी सूरतहोगी जीवप्राप्तिहोगी इज्जतकाकामहो संदेहमिटेगा धनका मनोर्थपूर्णहोगा देवीका पूजनकराओ औरअपनेहाथसे घ्रतखांडचावलचांदी कादानकरोईश्वरचाहेतोउपायकरतेही इच्छापूर्णहोगी औरतुमपरउपकारीहो सत्यवादीहो असत्यकोपसंदनहींकरते

५५. हे प्रच्छक चित्त चिंता भविष्यातगृ
हक्लेशन संशय: धनमानम हानिपीडा
देह दीर्घता मंगलाचारकं योगं वंशवृद्धि च
प्राप्त ये राजद्वार कन्या यं धनहानि विलंब
ता प्रश्न का फल ये है तरह २ की वार्ता लाभ
सो चो हो काम का बूसेबा हरहै दशाकहै म
हीने मे मध्यम है न्यून दशा में धन हानि वि
षेशव्यय लाभ मध्यम चिंता क्लेश नुक्सान
होते हैं राजद्वार में भी काम मर्जी के माफि
क नहीं होते सो काम कवतक होगा जो घर
में चंदना चमत्कारी हो वंश की इज्जत की
व्रद्धि हो और वो मित्ले एक जीव में चित्त विषे
श गहता है सो शिवजी का पूजन चींटी नाल
देना श्रेष्ठ है और अपने हाथ से गुड़ गेंहू लाल
वस्त्र लाल पुष्प आदि दान करके दई श्वर चा
हे तो अब काम शीघ्र हो कामना पूर्ण होगी

५६ हे प्रच्छयगुप्त चिंता शरीरेन धनहानी च दृश्यते गृहपीड़ा भविष्यति दृश्यते भाग्यमंदता जीव चिंता च प्राप्नोति मंगला चारहर्ष कंधन नष्ट न संदेहो जीव प्रश्ने च प्रश्न ये इस समय दुखभाव स्वर है इसमें भाग्य की वृद्धि वंश की वृद्धि मंगलाचार राजद्वार में न्याय किसी प्यारे की चिंता विद्या का लाभ रोजगार कृत्यपीड़ा का यत्न दुस्वभाव स्वर में इस प्रकार प्रश्न होते हैं सो तीन ग्रह तुम्हारी रासपै आजकल ना किस है पत्र में देखो ना किस है या नहीं जरूर है इन ना किस ग्रहों का दान मंत्र जाप कराओ जिससे भाग्य की वृद्धि का नाला खुले और उच्च पद वी मिले और ये जीव की प्राप्ति के मंगलाचार के काम हों और गम गई हुई चीज प्राप्त हो अंजाम कुशल है जिसे चाहो सो मिलेगा

५७. हेप्रच्छकतुम्हाराप्रश्न जीवरूप लक्ष्मीकाहै चिंतादीर्घहैऔर स्वरदुस्व भावहैप्रश्नदोतरहकेसेहैंएकशैका अल गहोजाना गेजगारमध्यमहोना चित्त कीचिंताचित्तमेंही समाजाती है घरमें अंधेरासाहै जीवकीलालसाहैजतनभी करेपरन्तुव्रथागएगुप्ताचिंता इज्जतका ख्यालहै औरयेख्यालहैअबकेभीकाम हांगाराजद्वारकाउच्यपदवीकी अशा हैअबचिंताइसप्रश्नकीहैसोकाम ईश्वर आधीनहैदिनबहुतसमयसे मध्यम है भाग्यउदयहोनेकोहोताहैफिररुकजाता हेअबपूजनश्री दुर्गादेवीकाकरानाचाहि येकईग्रहरासपेकैडहैं उनकाउपायकरा नाचाहियेकामफतहहोकष्टबाधनष्टहो लाभकीसूरतअच्छीबनेगी वो मिलेगी

५८.हेप्रच्छंकदीर्घ।चिंताचप्राप्नोतिजीव प्राप्तिनदृश्यतेभयभीतहृदादृश्यपराधी नोपिकृत्ययाराजद्वार कंकार्यधनव्यय भविष्यतिअंतकार्यमहासिद्धिस्त्रगुणाप रिभाषतःतुमपैवहुतदशान्यूनथीअनेक प्रकारकोफिक्र जीवाचिंताधनका जाना गुप्तक्लेशरहा तुम्हाराचित्तएकजीवमेंत त्परहैनईनईवार्तालाभसोचाहासोअथा जातीहैअवरोजगारकीभीसूरतहोगीये जोजीवकीलालसाहैपूर्णहै।परंतुविलंबहै देरसेफतहहोगाकाममेंलाभहोग छाया दानगुड़गेंहूंलालवस्त्रसुवर्णदानमें शीघ्र मनकीकामनापूर्णहोगीऔरदूसरालाभ काकार्यभीसिद्धिहोगा कामदेवकीउन मत्तामेंनीचबुद्धिहोजातीहैसोग्रहकाप्र भावहैअंजामकुशलभूमि लाभ होगा

५९.हेप्रच्छक तुम्हारा काम काबू से वाहरहै दिनरातविचित्रतरहरकीवार्ता लाभसोचोहोवनकरकामकीआनन्दकी सूरत मध्यमसीहोगई ऐसीदशामेंगुप्त चिंताशत्रुकाचित्तमेंभयसाधनकाचला जानामित्रकाख्यालरहताहैरोजगारका मध्यमहोनाकष्टव्याधाहोखोटीदशामें बहुतबातोंकाख्यालहोताहै तुमपक्षियों कोअन्नबाजराभोजनदोश्री बटुकभैरव कापूजनकराओयेमंत्रजपोउँऐंह्रींक्लींश्रीं श्रीविष्णुभगवानममअपराधक्षमायकुरु कुरुसर्वविघ्नविनाशायममकामना पूर्ण कुरुकुरुस्वाहामंत्रकेकरानेसेवंशकीव्रद्धि होतीहैरोजगारश्रेष्टहोताहैजीवकीप्राप्ती होतीहैराजद्वारसेफतैहोतीहैगईहुईलक्ष्मी फिर आतीहै सर्वकामना सिद्धहोतीहै

६०.हेप्रच्छक तुम्हारा काम फतेहोगा स्वरदाहना चलताहै इससमयकेप्रश्न कायेहफलहै चिंताफिकमिटेगा गईसो गई अवराखरही जिसनेउत्पन्नाकियाहै देगावहीजीवकीप्राप्तिहोगीराजद्वारसे लाभहोगाखुशीहोगीमंगलाचारहोगा एकमित्रमेंविशेषमनरहेहैआधीनरहेगा भूमिलाभहोगादशाबहुतादिनसेमध्यम थीअबदशा बदलनेवालीहै कामदेवकी प्रबलतामें न्यून बुद्धिहोजातीहै जबजो तुम्हारीरासपै ग्रहमध्यमहैंउनकादान निश्चैकरकेकराओ कामहोताहोतारुक जाताहैशत्रुहानिकरातेहैं काम औरके आधीनहै कई आदमियोंसे मिल के कामहोगा अबदशाअच्छी आनेवाली है येजो और कामहे सोवहभी होगा

६१. हे प्रच्छक प्रश्न जरा मध्यम मालूम होता है पुत्र की लाभ सगाई रोजगार मध्यं मदशा में मुशाकिल से होते हैं अर्थात् होता २ लाभ रुक जाता है धन का नुक्सान धन हर न होता है राजद्वार से फते होना मुशकल हो जाता है उच्चपदवी नहीं मिलती जीव की प्यारे की चिंता हो जाती है जो काम सोचो तार भंग हो जाती है गुप्त शत्रु भांजी मार देते हैं एक मनोर्थ बहुत दिन से सोच रक्खा है ईश्वर चाहे तब हो अब तुम इष्टदेव और घर के पित्रों निमित्त कुछ जप दान कराओ जिस से मनोर्थ सिद्ध हो जिस की चाहना है वो मिले जीव की प्राप्ति हो रोजगार भारी हो राजद्वा र से फते हो गई चीज मिले मंगलाचार हो इतने पूजन न बनेगा कोई कार्य दुरुस्त न हो गा. काम मध्यम रहेगा अन्त में कुशल है

६२. हे प्रच्छक अब तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा श्रेष्ट दशा आने वाली है उत्तम दशा गई चीज का मिलना रोजगार में लाभ अन्न में लाभ जीव की प्राप्ति राजद्वार में फतै घर में मंगल कष्ट्य धान ष्टयात्रा में लाभ और मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अब तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और बाकी हैं पत्रा देखो उनका जरा उपाय और श्रद्धा से करादो और श्याम को चींटी नाल जब तक बने तब तक दो दशा उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत फिक्र से बीचे सो अब ईश्वर चाहे काम पूर्ण होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ एक जीव में चित्त विशेषकर रहता है सो आनन्द में बीतेगी काम देव की उन मत्तता में बुद्धि न्यून भी होजाती है

६३.हेप्रच्छकअङ्कगाफिक्रकरोहातुम्हें
खुशखबरी हानेवालीहै गईसोगईअब
राखरहीअबबहुतदेनावहीमनोर्थपूर्णहों
गेपरन्तएक फिक्र भारीदीखैहैऊपरसे
खर्चआवैहैपासधनविशेषनहीं दीखता
परंतुचिंतामतकरनाकामबडाइज्जतके
माथबनेगाऔरकईजगहसेलाभ होगा
करेनवालाऔरहैवहीफिक्रकररहाहैअब
विशेषलाभकीसूरतहोगी मित्रमेंचित्त
बहुतरहनाहैवे भीचित्तसेप्यारकरेहैअब
तुमशीघ्रइसकामकीसिद्धिचाहोतो श्री
गंगाजीके५ब्राह्मणखिरखांडकेजिमाओ
औरसद्धिचावलदहीदानकरोकामशीघ्र
फतैहोगाऔरगुप्त लाभहोगाघरमेंचांद
ना होगाएककाम गुप्तसे गुप्त न किस
बनाथा सोईश्वरका ध्यान रक्खे करो

६४.हेप्रच्छकतुमपर बहुतदिनोंसेदशा नाकिसथीनहींतो निहालहोजातेलाभ कामूरतमेंहानपैदा होगईगुप्तशत्रुबुराई करेहैअबएकऔरखुशीकीबाततुम्हेंहोने कोहोरहीहैदशानाकिसमें धनमालका निकलजानापीडाका घरमें बासहोना इज्जतकाभयहोना रोजगारमेंहानहो नाहुवाहुवाया मंगलाचारका हटजाना राजद्वारकीचिंताहोनी येसबबातनाकि स दशामेंहोतीहैंअबतुमशामकोघृतका दीपकशिवजीके मंद्रमें प्रज्वलितकरो औरजलकालोटाभरकेशिवजीकोऔर पीपलकोदो औरइतवारको ब्राह्मणजि माओकईग्रहतुम्हारीरासपरनाकिस हैं पत्रेमेंदेखोसोनाकिसदशाका फलन्यून होजायगाजोमनोकामनाहै पूर्णहोगी

६५.हेप्रच्छकअबतुम्हारेखोटे दिनगये अच्छेआने वालेहैं अबतक तुमनेबहुत नाकिसदशाझेली नाकिसदशा में ही ऐसेकामहोतेहैं जोफिक्रतुमपरहैं बहुत नुक्सानउठायालाभकमरहापीडारूपी क्लेशमें धनखर्च औरचीज निकलगई इज्जतकाभयहुवापरन्तु अबअपनेइष्ट देवकापूजनपितृपीडाकाजतनऔरक्रूर ग्रहकादानानिश्चकरकेकराओफिरशीघ्र औरनयेलाभहोंगे जीवकीप्रा प्ति.मित्रसे मुलाकातजोहैविशेषहोगीघरमेंमंगला चारउच्चपदवी प्रःप्तहोगी ग्रहकीपीडा नष्टहोगीशत्रुकानाश औरयेजोमनकी कामनाहैसो पूर्णहोगी औरबड़ेरफिक्र जोऊपरसेखर्चकेदीखेहैंसोसब आनंदमें कांटासानिकलजायगाकामसिद्धहोगा

६६. हे प्रच्छक प्रश्न इससमयका बहुत श्रेष्ठ तुम्हारा दीखता है बुरे दिन गये अच्छे आनेवाले थे सो तुम्हारी रासपै दो तीन ग्रह मध्यम आ गये और तुमने उनका दान जप कराया नहीं इसकारण ऐसे फिक्र चिंता झेली लाभ कम रहा खर्च विशेष है पीडा की चिंता चित्त में भय सा होना काम उम्दा लाभ का अभी नहीं बना जीव की चिंता है वग की वृद्धि को मंगलाचार होना एक अपना प्यारा है उसी में चित्त बहुत रहता है गजद्वार की चिंता अब छाया दान और चने की दाल पैला वस्त्र हल्दी स्वर्ण दान करा ओ ईश्वर चाहे तो मन की कामना पूर्ण होगी उच्च पदवी मिलेगी जीव की प्राप्ति लाभ बढे भूमि से लाभ पीडा नष्ट होगी और राजद्वार से भी काम में फतह होगा

६७.हेप्रच्छक प्रश्न मध्यम है अभी
तुम्हारीमर्जीमाफिककामहोनेमें देरहै
कष्टरूपीरंजक्लेशचिंताबहुत रही काम
होताहोतारुकजावेहैयेमध्यम दशाका
फलहैकईगवनहोताभी ताज्जुब नहीं
एकमित्रसेप्रीतबहुतहै एकशत्रुगुप्त है
अबउसकामिलनाकठिनहैमंगलाचारमें
देरहैएकजीवकीभीअबलाषाहैअबतुम
नवगृहका पूजनदान करोदशा न्यून
बदलेगीश्रेष्ठआवेगीसो सब कामउत्तम
होंगेजीवकालाभगईहुईचीजफिरआवे
गीकष्टबाधानष्टहोगीउच्यपदवीमिलेगी
राजद्वारसेकामसिद्धहोगागुप्तचिंतामिट
गीचित्तमेंअनेकप्रकारकीवार्ताचित्तवन
करतेहोचित्तकीवार्ताचित्तमेंसमाजाती
है अबखुशीकी वार्ता सुननेमेंआवेंगी

६८. हे प्रच्छक जब दशा जीव पै ना किस
आती है और ग्रह चौथे आठवें बारहवें होजा
ते हैं तब ऐसे काम होने हैं खर्चा विशेष लाभ
कम और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है
सो आराम मिलेगा और हाथसे निकला
धन देर से प्राप्त होगा जिस काम को करना
विचारा हो समझ के करना अभी भाग्य
उदय होने में किंचित विलम्ब है एक मित्र में
बहुत मन रहता है सो उससे प्रीत बढ़ेगी और
मिलेगा नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हा
रे नाम की रास पै कैडे हैं उनका पत्रा देखकर
यत्न कराओ नहीं तो विशेष क्लेश होगा दुख
हो ग्रहों का यत्न होते ही आराम होगा उच्च
पदवी होगी काम में फायदा हो एक जगह
से विशेष माल मिलेगा विलंभ से खातर जमा
रक्खो ईश्वर का भजन करा करो भूलो मत

६९. हे प्रच्छक तुम्हारी बुद्धि भ्रम में गारहती हुई ईश्वर को सत्य नहीं मानते जिसने इतना बड़ा किया है और बराबर रक्षा करी है सो वह कहीं चला नहीं गया है बराबर रक्षा करेगा उस का भजन करो अन्त में आसा पूरण होगी और गई सो गई अब राख रही और वो मिलेगा मौजूद है चिंता मत करो आराम की सूरत हो रही है एक काम में विशेष लाभ होगा परंतु अब मंगल के व्रत और पक्षियों को बाजरा भोजन डाल दिया करो बड़ा पुन्य का काम है क्रूरग्रहों का जपदान कराते रहा करो मन वांछित फल मिलेगा कार्ज सिद्ध होंगे जो बडे खर्च के काम समझ रक्खे हैं कांटा सा आनन्द में निकल जायगा कामदेव की उनमत्ता में बुद्धि न्यून होजाती है

७०. हे पच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमनेजो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत और आराम की सूरत नजरआतीहैपिछलेसाल महीनेमध्यम रहे खर्च विशेष आमदनी न्यून अब भाग्यउदयहोगा और कामफतह होगा थोडा बिलंब है लाभकी सूरत होकर हटजातीहै ईश्वरका स्मण चित्त लगा करकरो और घृत सांभर दानकरो अब नये सिरेसे आनन्द का प्रबन्ध होगा एक काम तुम से न्यून बनगया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुतसी प्राप्तिहोगी नवीननवीन वार्ता की समुद्रकी तरंगसीचित्तमें उठतीहे

७१.हेप्रच्छककाम तुम्हारेमें विलंबहै कामअभी ठीकनहोगा दशा नाकिमहै कःग्रह नाकिमहैं पंचांगखोलकर देखो सोचोहोकुछहोहेकुछकईबातकीचिंता हैजीवकीधनकीमंगलाचारकीकष्टरूपी क्लेशकीपरंतुतुम सतवादीहोसत्यवोल्ने कोपसंदकरतेहोझूंटसेकोधितहोतेहोपरा थेकाममैंमनसेप्रीतलगाकेकरतेहोकिसी काबुरानहींचाहतेतुम्हेविद्याकमहैपरतुं बुद्धिअकलबडेविद्वानोमेंविशेषहैहरएक कीबातकीझूटसत्यकी परिक्षा समझतेहो एककामन्यूनबनगयाथासोईश्वरकी भक्तिविशेषकराश्रीगंगाजीके५ब्राह्मण खीरखंडकेजिमाओमनवांछितफलमि लेगालाभहोगासिरपेबडाजोफिकसमझ रक्खाहै सबकामआनंदमें होजायगा

७२ हेप्रच्छक तुम्हारा प्रश्न शगुण
इसवक्त बहुतश्रेष्ठहै तुम्हे बिना कार्ण
चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न होजाताहै
बुद्धिभ्रमणहोजातीहै गयासोगयाफिर
आवेगा मिलेगा क्या मिलेगा आराम
मिलेगा धनमिलेगा मंगलाचार होगा
पीडाकानाशहोगा जीवकोखुशीहोगी
अकस्मात खुशखबरीहोगी अपने इष्ट
देव पित्रदेवताके निमित्त वस्त्र मिष्टान्न
कच्चादूध मावश्याको पिलातेरहाकरो
रोजगार वढेगा उच्च पदवी पाओगे
एकजीवकाध्यान मित्रकेध्यानमेंचित्त
बहुतरहताहै तुम्है विद्यामध्यमहै परंतु
अकलवुद्धितेजहैं किसीकाबुरा नहीचा
हतेसत्यवार्ताको पसन्दकरतेहो खर्चहै
अंजाम कुशलहै राजद्वारसेअन्तफतेहै

७३हेप्रच्छक येजोतुमने प्रश्नकियाहै
जोहोगयासोहोगया अबखुशीकीवार्ता
होनेवालीहैखोटेदिनगये श्रेष्ठआनेवाले
हैंआरामहोगाकारजफतै होगा।जिसकी
चाहनाहैमिलेगाऔरयेजोचित्तमेंकाम
बिचाराहैदेरसे होगा दिनतुमकोबहुत
दिनोंसे मध्यमहैं मर्जिकेमाफिकलाभ
नहींहैनष्टदशामेंरजक्लेशपीड़ागुप्ताचिंता
शत्रुताहोतीहैसोअपनीरासपै जोदाते न
ग्रहनाकिसहैंदानमंत्र जपाकरो तबघर
में आनन्द मंगलाचार जीवकी प्राप्ति
यात्रासे लाभ काम फतैहोंगे गतप्राप्ति
होगी तुम्हारेशरीर पै व्रणायानी फोडे
फुंसी का निशान हैं आलस्य रहता है
नई नई बात का चितवन करते हो

७४ हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिसाफिक्रसे गुजरे और खर्च विशेषलाभ मध्यम सोअबप्राप्तिहोगी जीवकालाभहोगा व्याधा रंजनष्टहोंगे घरमें खुशीहोगी।चित्तकीचिंता।चित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसीनईनई उठतीहैंसोव्रथाजातीहैं एकजीवमें।चित्त बहुतरहताहै अबईश्वर चाहेतो कहींसे खुशीकी बातसुनोगे।उच्चपदवी प्राप्तहो गी। नाकिसग्रहोंकादान औरसर्वेश्धाम शिवजीका भजनकरेकरो और ये जो प्रश्नकिया है वो काम भी फतैहोगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

७५ हेप्रच्छकतुम्हारा कार्यसिद्ध होगा प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ठ आनेवालीहै जीवकी चिंता औरलाभ का उद्योग विशेष परन्तुलाभ अधूरा होताहै ओर येजो अबफिक्रहैखर्चसो दूरहोयगाआरामगुप्त वोभीमिलेगाफतै होगा कष्टनष्ट होगा कईग्रह नामकी रासपरनाकिसहैंसोउन ग्रहोंका उपाय बि धिपूर्वकपंडितसेकराओ बिनादानके करायेकार्यसिद्धदेरसेहोगाइसकारणचा वलमिष्टान्नस्वेतवस्त्ररजानित अर्थात् श्र द्धाप्रमाणचांदीदानकाकरना बहुतश्रेष्ठ हैमनकीकामनापूर्णहोगी अचानकला भकीसूरतहोगीचित्तस्थिरकरके किसी कालईश्वरकाभजनकराकरो प्रश्नश्रेष्ठ है अंजाम कुशलहै तीर्थयात्रा श्रेष्टहै

७६ है प्रच्छक इस समय के प्रश्न का ये फल
है कार्य आधीन से बाहर अर्थात् काम का तू
से बाहर चिंता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त करें
हैं परंतु उन से कुछ होनहीं सक्ता १ जीव में
चित्त बहुत रहता है दशा मध्यम के कारण
अनेक प्रकार की हानि वार्ता लाप सोचो हो
समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का
चितवन होकर निर्फल होता है कई फिक्र
भारी लगे हुवे जीव की प्रसिद्धी गी फतै और
चंगा होगा और ये जो अब चिंता है सब दूर
होपी तदानकरो चने की दान हलदी पेला
वस्त्र पेल पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्त चिंता
दूर होगी कार्य फते होगा मनवांछित फल
प्राप्त होगा दशा न्यून के कारण फिक्र चिंता
गृह में क्लेश होता है अब दशा श्रेष्ट आने वा
ली है ये कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

७७ हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्ट का है खर्च विशेष जीव की लालसा जीव चिंतातर है २ उद्वेग चित्त स्थिर नहीं काम काबू में बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहुत फिक्र है जब दशा मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगा परंतु पाप ग्रहों का पूजन विधिपूर्वक बटक भैरव का मंत्र भी जपावाओ [मंत्र] ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भर्वाय आपदुद्धारणाय सर्व विघ्न निवारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से मनोकामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूर होते हैं नई २ वार्ता का चितवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

७८हेप्रच्छक कामना पूर्णहोगी खुशी कीवार्ताहोनेवालीहै मिलेगामार्गकेगा फिक्र कामहो चित्त उसविनाव्याकुल सारहताहै दशान्यूनकेकारण ऐसेकाम हुए धन का खर्च जीवकादुख काम दूसरेके काबूमें होना औरदोतीन ग्रह तुम्हारीरासपैकेंद्रहैं मध्यमहैंपंचांग में देखोउनमध्यमेंगृहोंका पूजनदानमंत्र स्थिरचित्त करकेकराओकार्यशीघ्र सिद्ध होगा और येजो फिक्रहै सोदूरहोगा औरकई फिक्र खर्चकेआवैंहैं सो काम सिद्धहोंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति होगी परन्तु बिलम्बहैपूजनदानेसकार्य सिद्धहोगागुप्त लाभहोगाअब अंजाम अच्छा दीखहै कार्यमें भी लाभ होगा शिव जी का पूजन नित्य किया करो

७६ इससमयकेप्रश्नका फलयेहैकिका मठीकबैठगायान बैठगाइज्जनका भय होजाताहै ऐसीदशामेंगवनभीहोता है गुप्तचिंत्तारहेहैं कभीचित्तमेंकुछआताहै कभीकुछआताहैएसीदशामें खर्चविशे षहोताहै एकगुप्तमनोर्थहैसोकबतकआ रामहोगासो अवन्यूनदशावीचनेवाली हैऔरश्रेष्टआनेवालीहै परन्तुकाममेंदेर हैइष्टदेवकापूजन करनाचाहियेपित्रोंके निमितमिष्टान्नवस्त्रकच्चा दूध पीपलको जलदेना श्रेष्टहै कईमहिनेसेभ ग्यकाही नतायानीमध्यमहैपूजनकरनेसेधनकी प्राप्तीजीवका मिलना कष्टरूपीरजका दूरहोना येजोअब वहुतचिंताहै काम जरादेरसे मर्जीकेमाफिक होगा काम काबूसे वाहर होगया दशा मध्यमहै

८०हेप्रच्छकतुम्हारी रासपै आजकल
कईग्रहनीकसहैं पंचांग खोलकरदेखो
जबऐसेग्रहरासपैआतेहै लाभकमहोती
हैशत्रुउत्पनहोतामित्र व प्यारोंसेजुदाई
होतीहैकष्ट रंजहोतेहैं आमदनीहोतीर
रुकजातीहैजहांपूर्णलाभसमझोअधूरा
होताहैएकजीवलाल्सामासलगीरहेहै
व्यैदीर्घलाभमध्यमहो कामहोनेकोहो
फिरतारभंगहोजाहैसोअबमध्यमग्रहों
केदानजापकराओ आपभीयेमंत्रजपो
ओंऐंह्रींक्लींश्रीवासुदेवायनमःववटुकभैर
वायआपदुद्धरणायममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा
दानमंत्रजापकरनेमेयेजोतुम्हारेमनकी
कामनाहैपूर्णहोगीप्राप्तहोगीकष्टदूरहो
पुत्रोंकालाभराजसेफतेमित्रसेप्रीतविशेप
इतनेउपायनचनेगादशा मध्यमरहेगी

८१.हप्रच्छकये जोतुमने प्रश्नकिया है सोहोगयासोहोगया अबखुशीकीबार्ता होनेवालीहैखोटादिनगये श्रेष्ठआनेवाले हैंआरामहोकारजफतैहोगाया जिसकी चाहनाहैमिलेगाऔरयेजोचित्तमेंकाम विचाराहै देरसेहोगा दिन तुमको बहुत दिनोंसे मध्यमहैं मर्जीकेमाफिक लाभ नहींहैनष्टदशामेंरजक्लेशपीडागृहचिंता शत्रुताहोतीहैसोअपनीरासपैजोहोतीन प्रश्नाकिसहैं दानमंत्र जापकरो तबघर में आनन्द मंगलाचार जीव कीप्राप्ति यात्रासे लाभ काम फतैहोंगे गुप्तप्राप्ति होगी तुम्हारे शरीर पैं व्रणयानी फोड़े फुंसी का निशान है आलस्य रहताहै नई नई बात का चिंतवन करते हो

८२. हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फिक्र से गुजरे और खर्च विशेष लाभमध्यम सो अब प्राप्तिहोगी जीवका लाभहोगा व्याधा रंजनष्टहोंगे घरमें खुशीहोगी चित्तकीचिंताचित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसी नई नई उठतीहैंसोवृथाजातीहैं एकजीवमेंचित्त बहुतरहताहै अब ईश्वर चाहेतो कहींसे खुशीकी बातसुनोगेउच्चपदवी प्राप्तहोगी नाकिस ग्रहोंकादानऔरसुबेश्याम शिवजीका भजनकराकरो और येजो प्रश्न किया है वो कामभी फतेहोगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

८३. हे प्रच्छक तुम्हारा कार्य सिद्ध होगा प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ट आनेवाली है जीवकी चिंता और लाभ का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा होताहै और य जो अब फिक्रहै खर्चसो दूर होगाआरामगुप्तवोभी मिलेगा फतै होगा कष्ठ नष्ट होगा कई ग्रह नाम की रासपरनाकिसहैं सोउन ग्रहोंका उपाय बिधिपूर्वकपंडितसेकराओ बिनादानके करायेकार्यसिद्धदेरसेहोगाइसकारणचा वलमिष्टान्नस्वेतबस्त्र रजानित अर्थात् श्र द्धाप्रमाणचांदीदानका करनाबहुत श्रेष्ट हैमनकीकामनापूर्णहोगी अचानकला भकीसूरतहोगी चित्त स्थिरकरकेकिसी कालईश्वरका भजन कराकरोप्रश्न श्रेष्ट है अंजाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्टहै

८४, हेप्रच्छकइससमयकेप्रश्नका येफल
हैकार्यआधीनसेबाहरअर्थातकामकाबू
सेबाहरचिंताकष्टकईजीवशत्रुतागुप्तकरे
हैपरंतुउनसे कुछहोनहीं सक्ता १ जीवमें
चित्तबहुतरहताहैदशामध्यमकेकारण
अनेकप्रकारकीहानवार्तालाप सोचोहो
समुद्रकीलहरसीउठती हैनईनईबातका
चितवनहोकगनिर्फल होताहै कईफिक्र
भारीलगेहुवेजीवकीप्राप्तिहोगीफतेऔर
चंगाहोगाऔरयेजो अबचिंताहैसब दूर
होपीतदानकरोचनेकीदालहलदी पेला
वस्त्रपेलेपुष्पसुवर्णश्रद्धाप्रमाणगुप्त। चिंता
दूरहोगी कार्यफतेहोगा मनवांछितफल
प्र.प्तहोगादशान्यूनकेकारणफिक्रचिंता
गृहमेंक्लेशहोताहै अबदशाश्रेष्ट आने वा
लीहैयेकार्यहोकरनवीन कृत्यकरोगे ॥

८५. हेप्रच्छक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपीक
हुआ है खर्च विशेष जीवकी लालसा जीव
चिंता तरह २ उदवेग चित्त स्थिर नहीं काम
काबू से बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहु
तफिक्र है जब दशा मध्य में होती है अपने भी
पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब
है कामना पूर्ण तो होगी परंतु पापग्रहों का
पूजन विधिपूर्वक बटुक भैरव का मंत्र भी
जपवाओ (मंत्र) ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीबटुक भैर्वा
यआपदुद्धारणाय सर्वविघ्ननिवारणायमम
मरक्षा कुरुकुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से
मनोकामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को
दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा खर्च
विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है
लाभ अधूरे होते हैं नई २ बातों का चितवन
रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

८६. हेमच्छक कामना पूर्णहोगी खुशी कीबातहोनेवालीहै मिलेगा मजीकेमा फिक्र कामहो चित्त उस विना व्याकुल साग्हताहैदशा न्यूनकेकारण ऐसेकाम हुए धन का खर्च जीवकादुख काम दूसरेके काबूमें होना और दो तीन गृह तुम्हारीरासपैकैडेहैं मध्यमहैं पंचागमें देखो उनमध्यमग्रहोंका पूजनदानमंत्र स्थिरचितकरके कराओकार्य शीघ्र सिद्ध होगा और येजो फिक्रहै सोदूरहोगा और कई फिक्र खर्चके आवेंहैं सो काम सिद्धहोंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति होगी परंतु विलम्बहै पूजनदानसेकार्य सिद्धहोगा गुप्त लाभहोगा अत्र अंजाम अच्छा दीखहै कार्यमें भी लाभ होगा शिवजी का पूजन नित्य किया करो

८७,इससमयके प्रश्नका फलयेहैकिका
मठाकबैठेगायान बैठेगाइज्जतकाभय
होजाताहै ऐसीदशामेंगवनभीहोता है
गुप्तचिंतारहेहैकभीचित्तमेंकुछआताहै
कभीकुछआताहै ऐसीदशामें खत्रांवेशे
षहोताहैएकगुप्तमनोर्थहैसोकबतकआ
रामहोगासोअवन्यूनदशाथीचेनेंवाली
हैऔरश्रेष्ठआनेवाली है परन्तकाममें देर
हैइष्टदेवकापूजनकरनाचाहियेपित्रोंके
निमितमिष्टान्नवस्त्रकच्चा दूध पीपलको
जलदेनाश्रेष्टहैकईमहीनेमेंभाग्यकीही
नतायानीमध्यमईपूजनकरनेसेधनकी
प्राप्तिजीवकामिलना कष्टरूपी रंजका
दूरहोना येजो अव बहुत चिंता है काम
जरादेरसे मर्जीकेमाफिक होगा काम
कबू से बाहर होगया दशा मध्यम है

८८. हे प्रच्छक तुम्हारी रासपै आजकल कईग्रह नाकिसहैं पंचांग खोलकरदेखो जबऐसेग्रहरासपैआतेहैंलाभकमहोती है शत्रु उत्पनहोतेमित्र व प्यारोंसेजुदाई होतीहै कष्टरंजहोतेहैं आमदनीहोती २ रुकजातीहैजहांपूर्णलाभसमझोअधूरा होताहैएकजीवलालसाआसलगीरहै है व्यैदीर्घलाभमध्यमहोकामहोनेकोहो फिरतारभंगहोजाहैसोअबमध्यमग्रहों केदानजापकराओ आपभीयेमंत्रजपो ॐऐंह्रींक्लीं श्रींवासुदेवायनमः वटकभैर वायआपदुद्धारणायममरक्षांकुरुकुरुस्वाहा दानमंत्रजापकरनेसेयेजोतुम्हारेमनकी कामनाहैपूर्णहोगीप्राप्तहोगीकष्टदूरहों पुत्रोंकी लाभराजसेफतेमित्रसेप्रीतविशेष इतनेउपायसेबनेगादशा मध्यमरहेगी

८९. हेपृच्छकयेजो तुमने प्रश्नकियाहै अबदशाश्रेष्टआनेवालाहैकामनापूर्णहोगीजोकामचित्तमेंधारणाकराहैसोमिलेगाचिंतादूरहोगीकामफतैहोंगे मित्रोंसे प्रीतऔरकष्टपीडानष्टहोगीजोविचाराहै कामठीकबैठेंगेदशाबहुतदिनोंसेमध्यम थीव्यैविशेषहुवाजीवकीप्राप्ति होगीरिणकीन्यूनताहोयप्रश्नश्रेष्टहै उद्योगवउपाय पहलेतुमनेबहुतेरकरपरानिष्फलगयेकाम काबूमेंबाहरहै परअबईश्वरआनन्दखुश खबरोंकीवार्ताकरेंगेगुप्तलाभहोयजोप्रश्न विचाराहैइसकेवास्तेश्रीदेवीदुर्गालक्ष्मी कापूजनकराओ चावलचांदीश्वेतवस्त्र श्वेतफूलकादानकराओ कईग्रहमध्यम हैंसोउपायकरनेसेशीघ्रमनकी कामना पूर्ण होगी एकजीवका ध्यानरहता है

९०हेप्रच्छककामकाबूमें बाहरहै और
धनकाव्यैविशेषहैअकस्मातयेमामलाहै
सोजीवकीचिन्ताहैऔरआदमीको भी
चिंताबहुतहैइज्जतका ख्यालहैबडेरखर्च
दीखेहैंऔरतुमपरउपकारीसत्यवार्ताको
पसंदकरोहो छलछिद्रके कामकोपसंद
नहींकरतेतुम्हाराप्रश्नजावऔर धन का
हैऔरइज्जतकाभयहोताहैअनेकप्रकार
कीबातांसोचोहो निर्फलजाती है पता
नहींलगताजतनभीकरेअबनवग्रहोंका
दानमंत्रजापकराओयेकाम ईश्वरचाहे
तोठीकहोनेवालाहैऔरआदमीभीसहा
यताकरेंगेकईशत्रुहैंग्रहइष्टदेवकापूजन
कराने से काम मनइच्छा पूर्ण होगा
और मिलेगा बंश की वृद्धि होगीजी-
व लक्ष्मी प्राप्त होगा आराम होगा

६१. हेप्रच्छकइससमयकेप्रश्नकरनेका
येमामलाहैस्वरदुस्वभावहैघरमेंचमत्का
रीहोक्लेशमिटेंगे। घाटलेजिसकाप्रश्नहै
वोशैमिलेगीयानमिलेगीमंगलाचारकद
तकहोगा लाभखुशीकबतकहोगी। ऐसी
दशाकबतकरहेगी जीवकीचिंताहै वंश
कीवृद्धिहोआजकल तुमसोचोहो कुछ
होयहैकुछ दोतीनग्रहरासपैन।। किसआ
रहेहैंसोउनकाउपायदानपुन्यजापकरा
नेसेचित्तकामनोंथसिद्धहोगा खुशीहो
कामपरायेआधीनहैअबतुमचींटीनाल
जिमाओतोश्रेष्टहैभूखोंकोभोजनदोका
र्यसिद्धहोगादशाउतरनेवालीहै मनोर्थ
पूर्णाहोंगेअनेकप्रकारकीलाभकीसूरतहो
औरयेजो ऊपरसे फीक दीखेहैंसोसव
कांटासा निकलजायगा दशामध्यमहै

९२. इससमयजो आपनेप्रश्नकियाहै ऐसेस्वरमेंयेवार्ताहै किगुप्तचिंता १जीव कीलालमाबनीरहतीधनसेहीसारेकार्य सिद्धहोंहैं रोजगार मेंमध्यमलाभहैसो प्राप्तहोगीयानहींमंगलाचारकीसूरतक बतकहोजिससे घरमेंचांदनाहोआराम होकबतकदिनकेडेढ़गुप्तलाभभी होगी येझगड़ाकबतकमिटेगादिनरातचित्तमें चिंताक्लेशरहेहैकबतकदिनअच्छेआवेंगे येप्रश्नब्राह्मणकोदही लड्डूमिष्टानभोज नदेनेसेकामहो अपनेइष्टदेव कापूजन घरमें पित्रपीड़ाका उपायकरोउपायके करानेसेअबकेकामसिद्धहोइज्जतबढेगी सबसेजीतोगेशत्रुरूपीग्रह हानकररहेहैं दिनरातनईनईवार्तासोचोहोसबनिर्फल जातीहै परन्तु अंजाम कुशलता है ॥

९३ इससमयके प्रश्नकायेफलहैजीव
चिंताभविष्यति धनन्यूनंदिनेदिनेमंग
लाचारविलम्बस्यपराधीनकृत्ययोराज
द्वारकन्यार्थंरिथरोकार्यद्रष्टय:ग्रहपीडा
चप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषित:मध्यमद
शामेंमध्यमकार्यहोजातेहैंमनकीवार्ता
कबतकपूर्णहोगी मिलेगीयानहीं रोज
गारकीहानीहै कबतकवृद्धिहोगीआज
कलादिननाकिसहैं घरमें चांदना कब
तकहोयेकामअबकेभीफतहहोगाजिस
सेवंशकीवृद्धि हो तुम्हारीरासपेकईग्रह
मध्यमहैंपत्रादेखोनाकिसग्रहोकादान
मंत्रजापछायादानकरानेसे अबयेमनो
र्थसिद्धहोगाकामकावूसेबाहरहैमामला
ईश्वरकेआधीनहै परन्तुजोबातचित्तमें
औरहैयेगृहकाप्रभावहै अंन्तअच्छाहै

९६६६प्रच्छयगुप्तचिंताशरीरेनधनहानी
चदृश्यते गृहपीड़ा भविष्यति दृश्यते
भाग्यमंदताजीवचिंताचप्राप्तोतिमंगला
चारहर्षकंधननष्टनसंदेहोजीवप्रश्नेचप्र
श्रयेइससमयदुसुभावस्वरहैइसमेंभाग्य
कीवृद्धिवंशकीवृद्धमंगलाचारराजद्वार
मेंन्यायकिसीप्यारेकीचिंताविद्याकाला
भरोजगारकत्यपीड़ाकायत्नदुस्वभाव
स्वरमेंइसप्रकारप्रश्नहोतेहैंसोतीन गृह
तुम्हारीरासपैआजकलनाकिसहैंपत्रमें
देखोनाकिसहैंयानहींजरूरहैंइननाकि
सगृहोंकादानमंत्रजापकराओ जिससे
भाग्यकीवृद्धिकानालाखुलेऔरउच्चपद
वीमिलेऔरयेजीवकीप्राप्तीकेमंगलाचा
रकेकामहोंऔरगतगईहुईचीजप्राप्तहो
अंजामकुशलहैजिसेचाहोसो मिलेगा

९७. हे पृच्छक तुम्हारा प्रश्न जीवरूप लक्ष्मी का है चिंता दीर्घ है और स्वर दुस्व भाव है प्रश्न दो तरह के से हैं एक शंका अलग हो जाना रोजगार मध्यम होना चित्त की चिंता चित्त में ही समा जाती है घर में अंधेरा सा है जीव की लालसा है जतन भी करे परन्तु व्रथा गए गुसा चिंता इज्जत का ख्याल है और ये ख्याल है अब के भी काम होगा राज द्वार का उच्य पदवी की आशा है अब चिंता इस प्रश्न की है सो काम ईश्वर आधीन है दिन बहुत समय से मध्यम है भाग्य उदय होने को होता है फिर रुक जाता है अब पूजन श्री दुर्गा देवी का कराना चाहिये कई ग्रह रास पर कैंड हैं उनका उपाय कराना चाहिये काम फतह हो कष्ट नाश न हो लाभ की सूरत अच्छी बनेगी वो मिलेगी

९८.हेप्रच्छकदीर्घ।चिंताचप्राप्नोतिजीव प्राप्तिनदृश्यंतभयभीतहृदादृश्यपराधी नोपिकृत्ययाराजद्वार कंकार्यधनव्यय भविष्यतिअंतकार्यमहासिद्धिभृगुणाप- रिभाषतःतुमपैबहुतदशान्यूनथीअनेक प्रकारकेफिक्र जीवाचिंताधनका जाना गुप्तक्लेशरहा तुम्हाराचित्तएकजीवमेंत त्परहैनईनईआशालाभसोचाहासोवृथा जातीहैअबरोजगारकीभीसूरतहोगीयं जोजीवकीलालसाहैपूर्णहै।परंतुविलंबहै देरसेफलहहोगाकाममेंलाभहै ग छाया दानगुड़गेंहूंलालवस्त्रसुवर्णदानसे शीघ्र मनकीकामनापूर्णहोगीऔरदूसरालाभ काकार्यभीसिद्धहोगा कामदेवकीउन मत्तामेंनीचबुद्धिहोजातीहैसोग्रहकाप्र भावहैअंजामकुशलभूमि लाभ होगा

९९.हेप्रच्छक तुम्हारा काम काबू से वाहरहै दिनरातविचित्रतरहरकीवार्ता लाभसोचोहोवनकरकामकीआनन्दकी सूरत मध्यमसीहोगई ऐसीदशामेंगुप्त चिंताशत्रुकाचित्तमेंभयसाधनकाचलाजानामित्रकाख्यालरहताहैरोजगारका मध्यमहोनाकष्टव्याधाहोखोटीदशामें बहुतबातोंकाख्यालहोताहै तुमपाक्षियों कोअन्नबाजराभोजनदोश्री बटुकभैरव कापूजनकराओयेमंत्रजपोउॅंऐंह्रींक्लींश्रीं श्रीविष्णुभगवानममअपराधक्षमायकुरु कुरुसर्वविघ्नविनाशायममकामना पूर्ण कुरुकुरुस्वाहामंत्रकेकरानेसेवंशकीवृद्धि होतीहैरोजगारश्रेष्टहोताहैजीवकीप्राप्ती होतीहैराजद्वारसेफतैहोतीहैगईहुईलक्ष्मी फिर आतीहै सर्वकामना सिद्धहोतीहै

१००.हेप्रच्छक तुम्हारा काम फतेहोगा एकरदोहना चलताहै इससमयकेप्रश्न कायेइफलहै चिंताफिक्रमिटेगा गईगो गई अबराखरही जिसनेउत्पन्नकियाहै देगावहीजीवकीप्राप्तिहोगीराजद्वारसे लाभहोगाखुशीहोगीमंगलाचारहोगा एकमित्रसेंविशेषमनरहैहैआधीनरहेगा भूमिलाभहोगादशाबहुतदिनसेमध्यम थीअबदशा बदलनेवालीहै कामदेवकी प्रबलतामें न्यून बुद्धिहोजातीहे जबजो तुम्हारीरासपै ग्रहमध्यमहैंउनकादान निश्चैकरकेकराओ कामहोताहोतारुक जाताहैशत्रुहानिकरातेहैं काम औरके आधीनहै कई आदमियोंसे मिल कै कामहोगा अबदशाअच्छी आनेवाली है येजो और कामहे सोवहभी होगा

१०१. हे प्रच्छक प्रश्न जरा मध्यम मालूम होता है पुत्र की लाभ सगाई रोजगार मध्यम देशा में मुशकिल से होते हैं अर्थात् होता र लाभ रुक जाता है धन का नुकसान धन दूर नहीं होता है राजद्वार से फते होना मुशकल हो जाता है उच्च पदवी नहीं मिलती जीव की प्यारे की चिंता हो जाती है जो काम सोचो तार भंग हो जाती है गुप्त शत्रु भी जो मार देते हैं एक मनोर्थ बहुत दिन से सोच रक्खा है ईश्वर चाहे तब हो अब तुम इष्टदेव और घर के पित्रों निमित्त कुछ जप दान कराओ जिस से मनोर्थ सिद्ध हो जिसकी चाहना है वो मिले जीव की प्राप्ति हो रोजगार भारी हो राजद्वार से फते हो गई चीज मिले मंगलाचार हो इतने पूजन न बनेगा कोई कार्य दुरुस्त न होगा काम मध्यम रहेगा अन्त में कुशल है

१०२. हे पृच्छक अब तुम्हारा मनोर्थ सिद्ध होगा श्रेष्ट दशा आने वाली है उत्तम दशा गई चीज का मिलना रोजगार में लाभ अन्न में लाभ जीव की प्राप्ति राज द्वार में फतै घर में मंगला कष्ट व्याधि नष्ट यात्रा में लाभ और मन का मनोर्थ भी सिद्ध होगा अब तुम्हारी रास पर दो ग्रह नाकिस और वाकी हैं पत्रा देखो उनका जरा उपाय और श्रद्धा से करादो और श्याम को चींटी नाल जबतक बने तबतक दो दशा उत्तम आने वाली है पिछले दिन बहुत फिक्र से बीचे सो अब ईश्वर चाहे काम पूर्ण होंगे आस पूरी होगी मिलके लाभ एक जीव में चित्त विशेष कर रहता है सो आनन्द में बीतेगी काम देव की उन मत्तता में बुद्धि न्यून भी होजाती है

१०३.हेप्रच्छकअक्षरगाफिक्रकरोहातुम्हें
खुशखबरी हानेवालीहै गईसोगई अब
रखरहीअक्षरहुतदेगावहीमनोर्थपूर्णहों
गेपरन्तएक फिक्र भारीनीखेहै ऊपरसे
खर्चआवेहैपासघर्नाविगेपनहीं दीखता
परंतुचिंतामतकरनाकामबडाइज्जनके
साथबनगाऔरकईजगहसेलाभ होगा
करनेवालाओरहैवहीफिक्रकररहाहैअब
विशेपलाभकीसूरतहोगी मित्रमेंचित्त
बहुलरहनाहैवभेचित्तसेप्यारकरेहैअब
तुमशीघ्रइसकामकोसिद्धचाहोतो श्री
गंगाजीके५ब्राह्मणोंकोरखांडकेजिमाओ
औरसफेदचावलदईदानकरोकामशीघ्र
फतैहोगाऔरगुप्त लाभहोगाघरमेंचांद
ना होगाएककाम गुप्तसे गुप्त न किस
बनाथा सोईश्वरका ध्यान रक्खे करो।

१०४.हेप्रच्छकतुमपर बहुतदिनोंसेदशा नाकिसथीनहींतो निहालहोजातेलाभ कोमरतमेंहानपैदा होगईगुमशत्रुबुराई करेहैअबएकऔरखुशीकीबाततुम्हेंहोने कोहोरहीहैदशानाकिसमें धनमालका निकलजानापीडाका घरमें बासहोना इज्जतकाभयहोना रोजगारमेंहानहो नाहुवाहुवाया मंगलाचारका हटजाना राजद्वारकीचिंताहोनी येसबबातनाकि स दशामेंहोतीहैंअबतुमशामकोघृतका दीपकशिवजीके मन्द्रमें प्रज्वलितकरो औरजलकालोटाभरकेशिवजीकोऔर पीपलकोदो औरइतवारको ब्राह्मणाजि माओकईग्रहतुम्हारीरामपरनाकिस हैं पत्रेमेंदेखोसोनाकिसदशाका फलन्यून होजायगाजोमनोकामनाहै पूर्णहोगी

१०५.हेपच्छकअबतुम्हारेखोटेदिनगये
अच्छेआनेवालेहैं अबतक तुमनेबहुत
नाकिसदशाझेली नाकिसदशा में ही
ऐसेकामहोतेहैं जोफिकतुमपरहैं बहुत
नुक्सानउठायालाभकमरहापीड़ारूपी
क्लेशमें धनखर्च औरचीज निकलगई
इज्जतकाभयहुवापरन्तु अबअपनेइष्ट
देवकापूजनपितृपीडाकाजतनऔरकूर
ग्रहकादाननिश्चयकरकेकराओफिरशीघ्र
औरनयेलाभहोंगे जीवकीप्राप्तिमित्रसे
मुलाकातजोहैविशेषहोगीघरमेंमंगला
चारउच्चपदवी प्राप्तहोगी ग्रहकीपीड़ा
नष्टहोगीशत्रुकानाश औरयेजोमनकी
कामनाहैसो पूर्णहोगी औरबड़ेरफिक्र
जोऊपरलेखर्चकेदेखेहैंसोसबआनंदमें
कांटासानिकलजायगाकामसिद्धहोगा

१०६.हेप्रच्छक प्रश्न इससमयकाबहुत
श्रेष्ठतुम्हारादीखताहै बुरेदिनगयेअच्छे
आनेवालेथे सोतुम्हारीरासपैदोतीनग्रह
मध्यमआगयेऔरतुमनेउनकादानजप
करायानहीं इसकारण ऐसेफिक्रचिंता
झेलीलाभकमरहाखर्चाविशेषहैपीडाकी
चिंताचित्तमेंभयसाहोनाकामउम्दाला
भकाअभीनहींबनाजीवकीचिंताहैवश
कीवृद्धिकोमंगलाचारहोनाएकअपना
प्याराहैउसीमेंचित्तबहुतरहनाहैगजद्वा
रकी चिंता अबछायादानऔरचनेकी
दालपेलावस्त्र हल्दीस्वर्ण दानकराओ
ईश्वर चाहतो मनकीकामनापूर्णहोगी
उच्चपदवीमिलेगी जीवकी प्राप्तिलाभ
बढे भूमिसेलाभ पीडा नष्ट होगीऔर
राजद्वार सेभी काम में फतह होगा

१०७.हेप्रच्छक प्रश्न मध्यम है अभी
तुम्हारीमर्जीमाफिककामहोनेमें देरहै
कष्टरूपीरंजक्लेशचिंताबहुत रही काम
होताहोतारुकजावेहैयेमध्यम दशाका
फलहैकहींगवनहोताभी ताज्जुब नहीं
एकमित्रसेप्रीतबहुतहै एकशत्रुगुप्त है
अबउसकामिलनाकठिनहैमंगलाचारमें
देरहैएकजीवकीभीअभिलाषाहैअबतुम
नवगृहका पूजनदान करोदशा न्यून
बदलेगीश्रेष्टआवेगीसो सब कामउत्तम
होंगेजीवकीलाभगईहुईचीजफिरआवे
गीकष्टबाधानष्टहोगीउच्चपदवीमिलेगी
राजद्वारसेकामसिद्धहोगागुप्तचिंतामिटे
गीचित्तमेंअनेकप्रकारकीवार्ताचित्तवन
करतेहोचित्तकीवार्ताचित्तमेंसमाजाती
है अबखुशीकी वार्ता सुननेमेंआवेंगी

१०८. हे प्रच्छक जब दशा जीव पैना किस आती है और ग्रह चौथे आठवें बारहवें हो जाते हैं तब ऐसे काम होने हैं खर्चा विशेष लाभ कम और एक जीव का बहुत ध्यान रहता है सो आराम मिलेगा और हाथ से निकला धन देर से प्राप्त होगा जिस काम को करना विचारा हो समझ के करना अभी भाग्य उदय होने में किंचित विलम्ब है एक मित्र में बहुत मन रहता है सो उससे प्रीत बढ़ेगी और मिलेगा नया लाभ होगा दो तीन ग्रह तुम्हारे नाम की रास पै कैडे हैं उनका पत्रा देखकर यत्न कराओ नहीं तो विशेष क्लेश होगा दुख होग्रहों का यत्न होते ही आराम होगा उच्च पदवी होगी काम में फायदा हो एक जगह से विशेष माल मिलेगा विलंभ से खातर जमा रक्खो ईश्वर का भजन करा करो भूलो मत

१०९.हेप्रच्छकतुह्मारीबुद्धिभ्रमैरहती हेईश्वरकोसत्यनहीमानतेजिसनेइतना बड़ाकियाहै और बरावर रक्षा करी है सोवहकहींचलानहींगयाहै बराबररक्षा करेगा उस का भजन करो अन्त में आसा पूरणहोगी और गईसोगई अब राखरही औरवो मिलेगा मौजूदहैचिंता मतकरो आगमकी सूरतहोरहीहै एक काममेंविशेषलाभहोगा परंतुअबमंगल केवर्त और पक्षियोंको बाजरा भोजन डाल दिया करो वड़ा पुन्यका कामहै क्रूरग्रहोकाजपदान करातेरहाकरो मन वांछितफलमिलेगा काजसिद्धहोंगे जो वडेखर्चकेकाम समझरक्खेहैं कांटासा आनन्दमें निकल जायगा कामदेवकी उनमत्त्ता में बुद्धि न्यून होजाती है

११०. हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमनेजो प्रश्न बिचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत और आराम की सूरत नजरआतीहै पिछलेसाल महीनेमध्यम रहे खर्च विशेष आमदनी न्यून अब भाग्यउदयहोगा और कामफतह होगा थोडा बिलंब है लाभकी सूरत होकर हटजातीहै ईश्वरका स्मण चित्त लगा करकरो और घृत सांभर दानकरो अब नये सिरेसे आनन्द का प्रबन्ध होगा एक काम तुम से न्यून बनगया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुतसी प्राप्तिहोगी नवीननवीन वार्ता की समुद्रकी तरंगसीचित्तमें उठतीहै

१११. हेप्रच्छककाम तुम्हारेमें विलंबहै कामअभी ठीकनहोगा दशा ना किमहै कईग्रह नाकिमहैं पंचांगखोलकर देखो सोचोहोकुछहोहैकुछकईबातोंकीचिंता हैजीवकीधनकीमंगलाचारकीकष्टरूपी क्लेशकीपरंतुतुम सतवादीहोसत्यबोलने कोपसंदकरतेहोझूटसेक्रोधितहोतेहोपरा येकाममेंमनसेप्रीतलगाकेकरतेहोकिसी कावुरानहींचाहतेतुम्हेविद्याकमहैपरंतु बुद्धिअकलबडोविद्वानोसेविशेषहैहरएक कीबातकीझूटसत्यकी परिक्षा समझलेते होएककामन्यूनबनगयाथासोईश्वरकी भक्तिविशेषकरोश्रीगंगाजीके५ब्राह्मण खीरखंडकेजिमाओमनवांछितफलमि लेगालाभहोगामिरपेवडाजोफिक्रसमझ रक्खाहै सबकामआनंदमें होजायगा

११०. हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमनेजो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत और आराम की सूरत नजरआतीहै पिछलेसाल महीनेमध्यम रहे खर्च विशेष आमदनी न्यून अब भाग्यउदयहोगा और कामफतह होगा थोडा बिलंब है लाभकी सूरत होकर हटजातीहै ईश्वरका स्मण चित्त लगा करकरो और घृत सांभर दानकरो अब नये सिरेसे आनन्द का प्रबन्ध होगा एक काम तुम से न्यून बनगया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुतसी प्राप्तिहोगी नवीननवीन वार्ता की समुद्रकी तरंगसीचित्तमें उठतीहै

१११.हेप्रच्छककाम तुम्हारेमें विलंवहै
कामअभी ठीकनहोगा दशा नाकिमहै
कईग्रह नाकिमहैं पंचांगखोलकर देखो
सोचोहोकुछहोहैकुछकईवार्ताकीचिंता
हैजीवकीधनकीमंगलाचारकीकष्टरूपी
क्लेशकीपरंतुतुम सतवादीहोसतवोलने
कोपसंदकरतेहोझूंटसेक्रोधितहोतेहोपरा
येकाममेंमनमेप्रीतलगाकेकरतेहोकिसी
काबुरानहींचाहतेतुम्हेविद्याकमहैपरंतु
बुद्धिअकलवडेविद्वानोसेविशेपहैहरएक
कीवातकीझूटसत्यकी परिक्षा समझलो
होएककामन्यूनवनगयाथासोईश्वरकी
भक्तिविशेपकरोश्रीगंगाजीके५ब्राह्मण
खीरखंडकेजिमाओमनवांछितफलमि
लेगालाभहोगाभिरपेवडाजोफिक्रसमझ
रक्खाहै सवकामआनंदमें होजायगा

११२ हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न शगुण
इसवक्त बहुत श्रेष्ठ है तुम्हे बिना कार्ण
चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न होजाता है
बुद्धि भ्रमण होजाती है गया सो गया फिर
आवेगा मिलेगा क्या मिलेगा आराम
मिलेगा धनामिलेगा मंगलाचार होगा
पीडाकानाशहोगा जीवकोखुशीहोगी
अकस्मात खुशखबरीहोगी अपने इष्ट
देव पित्रदेवताके निमित्त वस्त्र मिष्टान्न
कच्चादुग्ध मावस्याको पिलातेरहाकरो
रोजगार बढेगा उच्च पदवी पाओगे
एकजीवकाध्यान मित्रकेध्यानसेचित्त
बहुतरहताहै तुम्है विद्यामध्यमहै परंतु
अकलबुद्धितेजहै किसीकाबुरा नहीचा
हतेसत्यवार्ताको पसन्दकरतेहो खर्चहै
अंजाम कुशलहै राजद्वारसेअन्तफतेहै

११३हेप्रच्छक येजोतुमने प्रश्नकियाहै जोहोगयासोहोगया अबखुशीकीवार्ता होनेवालीहैखोटादिनगये श्रेष्ठआनेवाले हैंआरामहोगाकारजफतै होगाजिसकी चाहनाहैमिलेगाऔरयेजोचित्तमेंकाम बिचाराहैदेरसे होगा दिनतुमकोबहुत दिनोंसे मध्यमहैं माजिकेमाफिकलाभ नहींहैनष्टदशामेंरजक्लेशपीड़ागुप्तचिंता शत्रुताहोतीहैसोअपनीरासपैजोदोतीन ग्रहनाकिसहैंदानमंत्रजपाकरो तबघर में आनन्द मंगलाचार जीवकी प्राप्ति यात्रासे लाभ काम फतैहोंगे गुप्तप्राप्ति होगी तुम्हारेशरीर पै व्रणयानी फोडे फुंसी का निशान है आलस्य रहताहै नई नई बात का चितवन करते हो

११४ हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिसाफिक्रसे गुजरे और खर्च विशेषलाभ मध्यम सोअबप्राप्तिहोगी जीवकालाभहोगा व्याधा रंजनष्टहोंगे घरमें खुशीहोगी।चित्तकीचिंता चित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसीनईनई उठतीहैंसोग्रथाजातीहैएकजीवमें।चित्त बहुतरहताहै अबईश्वर चाहेतो कहींसे खुशीकी बातसुनोगे।उच्चपदवी प्राप्तहो गी। नाकिसग्रहोंकादान औरसबेरेश्याम शिवजीका भजनकरेकरो और येजो प्रश्नकिया है वो काम भी फतेहोगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से वाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

११५ हेप्रच्छकतुम्हारा कार्यसिद्ध होगा प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ठ आनेवालीहै जीवकी चिंता औरलाभ का उद्योग विशेष परन्तुलाभ अधूरा होताहै ओर येजो अबफिकहैखर्चसो दूरहोयगाआरामगुप्त वोभीमिलेगाफतै होगा कष्टनष्ट होगा कईग्रह नामकी रासपरनाकिसहैंसोउन ग्रहोंका उपाय विधिपूर्वकपंडितसेकराओ बिनादानके करायेकार्यसिद्धदेरसेहोगाइसकारणचा वलमिष्टान्नस्वेतवस्त्ररजनित अर्थात् श्र द्धाप्रमाणचांदीदानकाकरना वहुतश्रेष्ठ हैमनकीकामनापूर्णहोगी अचानकला भकीसूरतहोगीचित्तस्थिरकरके किसी कालईश्वरकाभजनकराकरो प्रश्नश्रेष्ठ है अंजाम कुशलहै तीर्थयात्रा श्रेष्टहै

११६ हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का ये फल है कार्य आधीन से बाहर अर्थात् काम काबू से बाहर चिंता कष्ट कई जीव शत्रुता गुप्त करें हैं परंतु उन से कुछ हो नहीं सक्ता १ जीव में चित्त बहुत रहता है दशा मध्यम के कारण अनेक प्रकार की हानि वार्ता लाप सो चो हो समुद्र की लहर सी उठती है नई नई बात का चिंतवन होकर निर्फल होता है कई फिक्र भारी लगे हुवे जीव की प्राप्ति होगी फतै और चंगा होगा और ये जो अब चिंता है सब दूर होपी तदान करो चने की दान हलदी पेला वस्त्र पेले पुष्प सुवर्ण श्रद्धा प्रमाण गुप्त चिंता दूर होगी कार्य फते होगा मनवांछित फल प्राप्त होगा दशा न्यून के कारण फिक्र चिंता गृह में क्लेश होता है अब दशा श्रेष्ठ आने वाली है ये कार्य होकर नवीन कृत्य करोगे ॥

११७है प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी क
ष्टका है खर्च विशेष जीवकी लालसा जीव
चिंता तरह२उद्वेग चित्त स्थिर नहीं काम
काबूमें बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहु
ता फिक्र है जब दशा मध्यम होती है अपने भी
पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब
है कामना पूर्ण तो होगा परंतु पापग्रहों का
पूजन विधिपूर्वक बटुक भैरव का मंत्र भी
जपावाओ [मंत्र] ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैर्वा
यआपदुद्धारणाय सर्वविघ्ननिवारणाय मं
मरक्षा कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र के जाप से
मनोकामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को
दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा खर्च
विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है
लाभ अधूर होते हैं नई२ वार्ता का चितवन
रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

११८हे प्रच्छक कामना पूर्णहोगी खुशी
कीवार्ताहोनेवालीहै मिलगामाजैकेगा
फिक्र कामहो चित्त उसबिनाव्याकुल
सारहताहै दशान्युनकेकारण ऐसेकाम
हुए धन का खर्च जीवकादुख काम
दूसरेके काबूमें होना औरदोतीन ग्रह
तुम्हारीरासपैकैड़हैं मध्यमहैंपंचांग में
देखोउनमध्यमेंगृहोंका पूजनदानमंत्र
स्थिरचित्त करकेकराओकार्यशीघ्र सि
द्ध होगा और येजो फिक्रहै सोदूरहोगा
औरकई फिक्र खर्चकेआवैंहैं सो काम
सिद्धहोंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति
होगी परन्तु विलम्बहैपूजनदानसेकार्य
सिद्धहोगागुप्त लाभहोगाअब अंजाम
अच्छा दीखहै कार्यमें भी लाभ होगा
शिव जी का पूजन नित्य किया करो

११६ इससमयकेप्रश्नका फलयेहै किका मठीकबैठगायान बैठेगाइज्जतका भय होजाताहै ऐसीदशामेंगवनभीहोता है गुप्तचिंत्तारहेहैं कभी चित्तमें कुछआताहै कभीकुछआताहै ऐसीदशामें खर्चविशे षहोताहै एकगुप्तमनोर्थहै सोकरतकआ रामहोगासो अवन्यूनदशावीचनेवाली हैऔरश्रेष्टआनेवालीहै परन्तकाममेंदेर हैइष्टदेवकापूजन करनाचाहिये पित्रोंके निमित मिष्ट अन्नवस्त्रकच्चा दूध पीपलको जलदेना श्रेष्टहै कईमहिनेसेभ ग्यकीही नतायानीमध्यमहैपूजनकरनेसेधनकी प्राप्तीजीवका मिलना कष्टरूपीरजका दूरहोना येजोअब बहुतचिंताहै काम जरादेरसे मर्जीकेमाफिक होगा काम काबूसे बाहर होगया दशा मध्यमहै

१२०हेप्रच्छकतुम्हारी रासपै आजकल
कईग्रहनाकिसहैं पंचांग खोलकरदेखो
जबऐसेग्रहरासपैआतेहैं लाभकमहोती
हैशत्रुउत्पनहोतामित्र व प्यारोंसेजुदाई
होनीहैकष्ट रंजहोतेहैं आमदनीहोतीर
रुकजातीहै जहां पूर्णलाभसमझोअधूरा
होताहैएकजीवलालसाआसरगी रहेहै
वयैदीर्घलाभ मध्यमहो कामहोनेकोहो
फिरतारभंगहोजाहैसोअब मध्यमग्रहों
केदानजापकराओ आपभीये मंत्रजपो
ॐऐंह्रींक्लींश्रीवासुदेवायनमः बटुकभैर
वायआपदुद्धारणायममरक्षा कुरुकुरुस्वाहा
दानमंत्रजापकरनेसे येजोतुम्हारेमनकी
कामनाहैपूर्णहोगीप्राप्तहोगीकष्टदूरहो
पुत्रोंकालाभराजसेफतैमित्रसेप्रीतविशेप
इतनेउपायनबनेगादशा मध्यमरहेगी

१२१. हे प्रच्छक ये जो तुमने प्रश्न किया है जो होगया सो होगया अब खुशी की बार्ता होनेवाली है खोटे दिन गये श्रेष्ट आनेवाले हैं आराम हो कारज फतै हो गाया जिसकी चाहना है मिलेगा और ये जो चित्त में काम विचारा है देरसे होगा दिन तुमको बहुत दिनों से मध्यम हैं मर्जी के माफिक लाभ नहीं है नष्ट दशा में रंज क्लेश पीड़ा गुप्त चिंता शत्रु ता होती है सो अपनी रास पै जो दातीन ग्रहना किसहैं दानमंत्र जापकरो तबघर में आनन्द मंगलाचार जीव की प्राप्ति यात्रा से लाभ काम फतै होंगे गुप्तप्राप्ति होगी तुम्हारे शरीर पै व्रणयानी फोड़े फुंसी का निशान है आलस्य रहताहै नई नई बात का चिंतवन करते हो

१२२.हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिस फ़िक्र से गुज़रे और खर्च विशेष लाभमध्यम सो अब प्राप्तिहोगी जीवका लाभहोगा व्याधा रंजनष्टहोंगे घरमें खुशीहोगी चित्तकीचिंताचित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसी नई नई उठतीहैंसोवृथाजातीहैंएकजीवमोंचित्त बहुतरहताहै अब ईश्वर चाहेतो कहींसे खुशीकी बातसुनोगेउच्चपदवी प्राप्तहोगी नाकिस ग्रहोंकादानऔरसुबेश्याम शिवजीका भजनकराकरो और येजो प्रश्न किया है वो कामभी फतेहोगा मिलेगा फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम काबू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरो काम फतै होगा

१२३. हेप्रच्छक तुम्हाराकार्य सिद्धहोगा प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ठ आनेवाली है जीवकी चिंता और लाभ का उद्योग विशेष परन्तु लाभ अधूरा होताहै और ये जो अब फिक्रहै खर्चसो दूर होगाआरामगुसवोभी मिलेगा फ़तै होगा कष्ठ नष्ट होगा कई ग्रह नाम की रासपरनाकिसहैं सोउन ग्रहोंका उपाय बिधिपूर्वकपंडितसेकराओ बिनादानके करायेकार्यसिद्धदेरसेहोगाइसकारणचा वलमिष्टान्नस्वेतबस्त्र रजानित अर्थात् श्र द्धाप्रमाणचांदीदानका करनाबहुतश्रेष्ट हैमनकीकामनापूर्णहोगी अचानकला भकीसूरतहोगी चित्त स्थिरकरकेकिसी कालईश्वरका भजन कराकरोप्रश्न श्रेष्ठ है अंजाम कुशल है तीर्थ यात्रा श्रेष्ठहै

१२४, हेप्रच्छकइससमयकेप्रश्नकायेफल हैकार्यआधीनसेबाहरअर्थातकामकाबु सेबाहरचिंताकष्टकईजीवशत्रुतागुप्तकरे हैपरंतुउनसे कुछहोनहीं सक्ता१जीवमें चित्तबहुतरहताहैदशामध्यमकेकारण अनेकप्रकारकीहानवार्तालाप सोचोहो समुद्रकीलहरसीउठतीहै नईनईबातका चिंतवनहोकरनिर्फल होताहै कईफिक्र भारीलगेहुवेजीवकीप्राप्तिहोगीफतेऔर चंगाहोगाओरयेजो अबचिंताहैसब दूर होपीतदानकरोचनेकीदालहलदी पेला वस्त्रपीलेपुष्पसुवर्णाश्रद्धाप्रमाणगुप्तचिंता दूरहोगी कार्यफतेहोगा मनवांछितफल प्राप्तहोगादशान्यूनकेकारणफिक्रचिंता गृहमेंक्लेशहोताहै अबदशाश्रेष्ट आने वाली हैयेकार्यहोकरनवीन कृत्यकरोगे ॥

१२५. हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्टका है खर्च विशेष जीवकी लालसा जीव चिंता तरह २ उद्वेग चित्त स्थिर नहीं काम काबू से बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहुत फिक्र है जब दशा मध्य में होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगी परंतु पापग्रहों का पूजन विधिपूर्वक बटुकभैरव का मंत्र भी जपवाओ (मंत्र) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्री वटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय सर्वविघ्ननिवारणायमम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा । इस मंत्र के जाप से मनोकामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को दीर्घ चिंता है सो काम हो और रामिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूरे होते हैं नई २ बातों का चितवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

१२६. हे पृच्छक कामना पूर्ण होगी खुशी की बात होनेवाली है मिलेगा मर्जी के मा फिक काम हो चित्त उस बिना व्याकुल सा रहता है दशा न्यून के कारण ऐसे काम हुए धन का खर्च जीव का दुख काम दूसरे के काबू में होना और दो तीन गृह तुम्हारी रास पै कैडे हैं मध्यम हैं पंचाग में देखो उन मध्यम ग्रहों का पूजन दान मंत्र स्थिर चित करके कराओ कार्य शीघ्र सिद्ध होगा और ये जो फिक्र है सो दूर होगा और कई फिक्र खर्च के आवे हैं सो काम सिद्ध होंगे धन मिलेगा जीव की प्राप्ति होगी परंतु बिलम्ब है पूजन दान से कार्य सिद्ध होगा गुप्त लाभ होगा अब अंजाम अच्छा दीखे है कार्य में भी लाभ होगा शिवजी का पूजन नित्य किया करो

१२७,इस समय के प्रश्न का फल ये है कि का
म ठीक बैठेगा या न बैठेगा इज्जत का भय
होजाता है ऐसी दशा में गवन भी होता है
गुप्त चिंता रहे है कभी चित्त में कुछ आता है
कभी कुछ आता है ऐसी दशा में खर्च विशे
ष होता है एक गुप्त मनोर्थ है सो कब तक आ
राम होगा सो अब न्यून दशा बीचने वाली
है और श्रेष्ठ आने वाली है परन्तु काम में देर
है इष्टदेव का पूजन करा ना चाहिये पित्रों के
निमित्त मिष्टान्न वस्त्र कच्चा दूध पीपल को
जल देना श्रेष्ठ है कई महीने से भाग्य की ही
नता यानी मध्यम है पूजन करने से धन की
प्राप्ति जीव का मिलना कष्ट रूपी रंज का
दूर होना ये जो अब बहुत चिंता है काम
जरा देर से मर्जी के माफिक होगा काम
काबू से बाहर होगया दशा मध्यम है

१२८.हेप्रच्छकतुम्हारीरासपै आजकल
कईग्रहनाकिसहैं पंचांग खोलकरदेखो
जबऐसेग्रहरासपेआतेहैंलाभकमहोती
हैशत्रु उत्पनहोतेमित्र व प्यारोंसेजुदाई
होतीहै कष्टरंजहोतेहैं आमदनीहोती २
रुकजातीहैजहांपूर्णलाभसमझोअधूरा
होताहैएकजीवलालसाआसलगीरहे है
क्यैदीर्घलाभमध्यमहो कामहोनेकोहो
फिरतारभंगहोजाहैसोअबमध्यमग्रहों
केदानजापकरगओ आपभीयेमंत्रजपो
ओंऐंह्रींक्लींश्रींवासुदेवायनमः वटुकभैर
वायआपदुद्धारणायममरक्षाकुरुकुरुस्वाहा
दानमंत्रजापकरनेसेयेजातुम्हारेमनकी
कामनाहैपूर्णहोगीप्राप्तहोगीकष्टदूरहो
पुत्रोंकी लाभराजसेफनेमित्रसेप्रीतविशेष
इतनेउपायसेबनेगादशा मध्यमरहेगी

१२६.इसप्रश्नकयेजोतुमने प्रश्नकियाहै
अबदशाश्रेष्टआनेवालाहैकामनापूर्णहो
गीजोकामनाचित्तमेंधारणाकराहैसोमिले
गाचिंतादूरहोगीकामफतैहोंगे मित्रोंसे
प्रीतऔरकष्टपीड़ानष्टहोगीजोविचाराहै
कामठीकबैठेंगेदशाबहुतादिनोंसेमध्यम
थीअबविशेषहुआजीवकीप्राप्ति होगीरिण
कीन्यूनताहोयप्रश्नश्रेष्टहै उद्योगवउपाय
पहलेतुमनेबहुतेरेकरपरानिर्फलगयेकाम
काबुमेबाहरहै परअबईश्वरआनन्दखुश
खबरीकीवार्ताकरेंगेगुप्तलाभहोयेजोप्रश्न
विचाराहैइसकेवास्तेश्रीदेवीदुर्गालक्ष्मी
कापूजनकराओ चावलचांदीस्वेतवस्त्र
श्वेतफूलकादानकराओ कईग्रहमध्यम
हैंसोउपायकरनेसशीघ्रमनकी कामना
पूर्ण होगी एकजीवका ध्यानरहता है

१३०हेपच्छककामकाजमे बाहरहै और धनकाव्यैविशेपहैअकरूमातयेमामलाहै सोजीवकीचिन्ताहैऔरआदमीकी भी चिंताबहुतहैइज्जतकाख्यालहैवडरखर्च दीखेहैंऔरतुमपरउपकारीसत्यवार्ताको पसंदकरोहो छलछिद्रके कामकोपसंद नहींकरतेतुम्हाराप्रश्नजीवऔर धन का हैऔरइज्जतकाभयहोताहैअनेकप्रकार कीबातांसोचोहो निर्फलजाती है पता नहींलगताजतनभीकरेअवनवग्रहोंका दानमंत्रजापकराओयेकामईश्वरचाहे तोठीकहोनेवालाहैऔरआदमीभीसहा यताकरेंगेकईशत्रुहैंग्रहइष्टदेवकापूजन कराने से काम मनइच्छा पूर्ण होगा और मिलेगा वंश की वृद्धि होगीजी- व लक्ष्मी प्राप्त होगा आराम होगा

१३१.हेपच्छकइससमयकेप्रश्नकरनेका
येमामलाहैस्वरदुस्वभावहैघरमेंचमत्का
रीहोक्लेशमिटेव्याधाटलेजिसकाप्रश्नहै
वोशैमिलेगीयानमिलेगीमंगलाचारकद
तकहोगा लाभखुशीकबतकहोगीऐसी
दशाकबतकरहेगी जीवकीचिंताहै बंश
कीवृद्धिहोआजकल तुमसोचोहो कुछ
होयहैकुछ दोतीनग्रहरासपैनाकिसआ
रहेहैंसोउनकाउपायदानपुन्यजापकरा
नेसेचित्तकामनोर्थसिद्धहोगा खुशीहो
कामपरायेआधीनहैअबतुमचींटीनाल;
जिमाओतोश्रेष्टहैभूखोंकोभोजनदोका
र्थसिद्धहोगादशाउत्तरनेवालीहै मनोर्थ
पूर्णहोंगेअनेकप्रकारकीलाभकीसूरतहो
औरयेजो ऊपरसे फीक्र दीखेंहैंसोसब
कांटासा निकलजायगा दशामध्यमहै

१३२. इससमयजो आपनेप्रश्नकियाहै ऐसेस्वरमेंयेवार्ताहै किशुभचिंता १जीव कीलालसाबनीरहतीधनसेहीसारेकार्य सिद्धहोतेहैं रोजगार मेंमध्यमलाभहैसो प्राप्तहोगीयानहींमंगलाचारकीसूरतक बतकहोजिससे घरमेंचांदनाहोआराम होकबतकदिनकैडेहैंशुभलाभभी होगी येझगड़ाकबतकामिटेगादिनरातचित्तमें चिंताक्लेशरहेहैकबतकदिनअच्छेआवेंगे येप्रश्नब्राह्मणकोदहीलड्डूमिष्टानभोज नदेनेसेकामहो अपनेइष्टदेव कापूजन घरमें पित्रपीड़ाका उपायकरोउपायके करानेसेअबकेकामसिद्धहोइज्जतबढेगी सबसेजीतोगेशत्रुरूपीग्रह हानकररहेहैं दिनरातनईनईवार्तासोचोहोसबनिर्फल जातीहै परन्तु अंजाम कुशलता है ॥

१३३इसमयके प्रश्नकायेफलहैजीव
चिंताभविष्यति धनन्यूनंदिनेदिनेमंग
लाचारविलम्बस्यपराधीनकृत्ययोराज
द्वारकन्यायंरिथरोकार्यद्रष्टय:ग्रहपीडा
चप्राप्नोतिभृगुणापरिभाषित:मध्यमद
शामेंमध्यमकार्यहोजातेहैंमनकीवार्ता
कबतकपूर्णहोगी मिलेगीयानहीं रोज
गारकीहानीहै कबतकवृद्धिहोगीआज
कलदिननाकिसहैं घरमें चांदना कब
तकहोयेकामअबकेभीफतहहोगाजिस
सेवंशकीवृद्धि हो तुम्हारीरासपैकईग्रह
मध्यमहैपत्रादेखोनाकिसग्रहोकादान
मंत्रजापछायादानकरानेसे अबयेमनो
र्थसिद्धहोगाकामकाबूसेबाहरहैमामला
ईश्वरकेआधीनहे परन्तुजोबातचित्तमें
औरहैयेगृहकाप्रभावहै अन्तअच्छाहै

१३४ हे पृच्छक तुम्हारा प्रश्न जीव की
चिंता का है काम पराधीन कर्म से बाहर
होगया बहुतेरे यत्न करो हो बहुतेरी बातें
सोचो हो मंगलाचार खुशी बंश की बृद्धि
राजद्वार विद्या की सिद्धि धन की जीत श्रेष्ठ
दशा में होती है अब जो तुम्हें ये चिंता और
लालसा जीव की है सो काम में विलंब है
परंतु मिलेगा और होगा परंतु जतन उपाय
से इच्छा पूर्ण होगी घर में स्वप्न भी दीखै है
आराम की सूरत होगी जीव प्राप्ति होगी
इज्जत का काम हो संदेह मिटेगा धन का
मनोर्थ पूर्ण होगा देवी का पूजन कराओ
और अपने हाथ से घृत खांड चावल चांदी
का दान करो ईश्वर चाहे तो उपाय करते ही
इच्छा पूर्ण होगी और तुम परउपकारी हो
सत्यवादी हो असत्य को पसंद नहीं करते

१२५. इष्टप्रच्छकाचित्त चिंताभविष्य तरु हकलेशनसंशय धनमानम हानिपीडा देइदीर्धतामंगलाचारकंयो वंशवृद्ध च नामयेराजद्वारकन्यायेधनहानिविलंब ताप्रश्नकाफलयेहैतरह २ कीवार्तालाभ सोचाहोकामकासंबाहरहै दशाकईमे हीनिमेमध्यमहैन्यूनदशामेधनहानिवि षशत्र्यश्वलाभमध्यमचित क्लेशनकमान होतेहैराजद्वारमेभीकाममर्जीकेमाफि कनहीहोतेसोकामकवतकहोगाजोघर मेंचंदनाचमत्कारीहोवेशकहिं उज्जतकी वृद्धिहोऔरवोमिलेएकजीवमेंचित्तविषे शरहताहैसोशिवजीकापूजनचौंटीनाल देनाश्रेष्ठहैओरअपनेहाथसेगुडगेहूलाल वस्त्रलालपुष्पआदिदानकरकेदेईश्वरचा हेतोअबकामशीघ्रहो कामनापूर्ण होगी

१३६ हेप्रच्छयगुप्तचिंताशरीरेनधनहानी
चदृश्यते गृहपीड़ाभविष्यति दृश्यते
भाग्यमंदताजीवचिंताचप्राप्तोतिमंगला
चागृहर्षकंधनलछनसंदेहोजोवप्रश्नेचप्रा
सयेइससमयदुसुभावस्वरहैइसमेंभाग्य
कीवृद्धिवंशकीवृद्धिमंगलाचारराजद्वार
मेंन्यायकिसीप्यारेकीचिंताविद्याकाला
भरोजगारकष्टपीड़ाकायत्नदुस्वभाव
स्वरमेंइसप्रकारप्रश्नहोतेहैंसोतीन ग्रह
तुम्हारीर सपैआजकलनाकिसहैंपत्रमें
देखोनाकिसहैंयानहींजरूरहैंइननाकि
सग्रहोंकादानमंत्रजापकराओ जिससे
भाग्यकीवृद्धिकानालाखुलेऔरउच्चपद
वीमिलेऔरयेजीवकीप्राप्तोकेमंगलाचा
रकेकारसहोंऔरगप्तगईहुईचीजप्राप्तहो
अंजामकुशलहैजिसेचाहोसो मिलेगा

१३७. हेपृच्छकतुम्हाराप्रश्न जीवरूप लक्ष्मीकाहै चिंतादीर्घहैऔर स्वरदुस्व भावहैप्रश्नदोतरहकेसेहैंएकशैका अल गहोजाना रोजगारमध्यमहोना चित्त कीचिंताचित्तमेंही समाजातीहै घरमें अंधेरासाहै जीवकीलालसाहैजतनभी करेपरन्तुव्रथागएगुप्ताचिंता इज्जतका ख्यालहै औरयेख्यालहैअबकेभीकाम होगाराजद्वारकाउच्चपदवीकी अ शा हैअबचिंताइसप्रश्नकीहैसोकाम ईश्वर आधीनहैदिनबहुतसमयसे मध्यम है भाग्यउदयहोनेकोहोताहैफिररुकजाता हैअबपूजनश्रीदुर्गादेवीकाकरानाचाहि येकईग्रहरासपकेडेहैं उनकाउपायकरा नाचाहियेकामफतहहोकष्टबाधनष्टहो लाभकीसूरतअच्छीबनेगी वो मिलेगी

१३८.हेप्रच्छकदीर्घ।चिंताचप्राप्नोतिजीव
प्राप्तिनदृश्यतेभयभीतहृद।दृश्यपराधी
नोपिक्रत्ययाराजद्वार कंकार्यधनव्यय
भविष्यतिअंतकार्यमहासिद्धिभृगुणाप
रिभाषत:तुमपैवहुतदशान्यूनथीअनेक
प्रकारकेफिक्र जीवाचिंताधनका जाना
गुप्तक्लेशरहा तुम्हाराचित्तएकजीवमेंत
त्परहैनईनईआतालाभसोचाहसोव्रथा
जातीहैअबरोजगारकीभीसूरतहोगीये
जोजीवकीलालसाह्वैपूर्णहै।परंतुविलंबहै
देरसेफतहहोगाकाममेंलाभहै।ग छाया
दानगुड़गेंहुंलालवस्त्रसुवर्णदानसे शीघ्र
मनकीकामनापूर्णहोगीऔरदूसरालाभ
काकार्यभीसिद्धिहोगा कामदेवकीउन
मत्तामेंनीचवुद्धिहोजातीहैसोग्रहकाप्र
भावहैअंजामकुशलभूमि लाभ होगा

१३९.हे प्रच्छक तुम्हारा काम काबू से वाहर है दिनरात विचित्रतरह रकी वार्ता लाभसोचो होवनकरकामकीआनन्दकी सूरत मध्यमसी होगई ऐसीदशा में गुप्त चिंताशत्रुका चित्त में भयसाधनका चला जानामित्रका ख्यालरहता है रोजगारका मध्यमहोना कष्टव्याधा हो खोटीदशा में बहुतबातों का ख्याल होता है तुमपक्षियों को अन्नबाजराभोजनदो श्री बटुकभैरव कापूजनकराओ थे मंत्रजपो ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं श्री विष्णुभगवानमम अपराधक्षमाय कुरु कुरु सर्वविघ्नविनाशाय मम कामना पूर्ण कुरु कुरु स्वाहा मंत्रके करानेसे वंशकी वृद्धि होती है रोजगार श्रेष्ठ होता है जीवकी प्राप्ती होती है राजद्वार से फते होती है गई हुई लक्ष्मी फिर आती है सर्वकामना सिद्ध होती है

१४०.हेप्रच्छक तुम्हाराकाम फतेहोगा स्वरदाहना चलताहै इससमयकेप्रश्न कायेहफलहै चिंताफिकिमिटेगा गईसो गई अबराखरही जिसनेउत्पन्नकियाहै देगावहीजीवकीप्राप्तिहोगी राजद्वारसे लाभहोगा खुशीहोगीमंगलाचारहोगा एकमित्रमेंविशेषमनरहेहै आधीनरहेगा भूमिलाभहोगादशाबहुतादिनसेमध्यम थीअबदशा बदलनेवालीहै कामदेवकी प्रबलतामें न्यून बुद्धिहोजातीहे जबजो तुम्हारीरासपै ग्रहमध्यमहैंउनकादान निश्चैकरकेकराओ कामहोताहोतारुक जाताहैशत्रुहानिकरातेहैं काम औरके आधीनहै कई आदमियोंसे मिल कै कामहोगा अबदशाअच्छी आनेवाली है येजो और कामहे सोवहभी होगा

१४१. हे प्रच्छक प्रश्न जरा मध्यम मालूम होता है पुत्र की लाभ सगाई रोजगार मध्यम दशा में मुशकिल से होते हैं अर्थात् होता र लाभ रुक जाता है धन का नुक्सान धन हर न होता है राजद्वार से फतैहा नामुशकल हो जाता है उच्चपदवी नहीं मिलती जीव की प्यारे की चिंता हो जाती है जो कामसोचो तार भंग हो जाती है गुप्त शत्रु भांजी मारदेते हैं एक मनोर्थ बहुत दिन से सोचरक्खा है ईश्वर चाहे तव हो अव तुम इष्टदेव और घर के पित्रों निमित्त कुछ जप दान कराओ जिस से मनोर्थ सिद्ध हो जिस की चाहना है वो मिले जीव की प्राप्ति हो रोजगार भारी हो राजद्वार से फतै हो गई चीज मिले मंगलाचार हो इतने पूजन न वनेगा कोई कार्य दुरुस्त न होगा काम मध्यम रहेगा अन्त में कुशल है

१४२. हेप्रच्छकअबतुम्हारामनोर्थसिद्ध होगा श्रेष्टदशाआनेवालीहैउत्तमदशा गईचीजका मिलना रोजगारमें लाभ अबनेलाभजीवकीप्राप्तिराजद्वारमेंफते घरमेंमंगलाकष्टव्याधानष्टयात्रामेंलाभ औरमनका मनोर्थभी सिद्धहोगा अब तुम्हारी रासपर दोग्रह नाकिस और बाकीहैं पत्रादेखो उनकाजरा उपाय और श्रद्धासे करादो और श्याम को चींटीनालजबतक बनेतबतकदो दशा उत्तम आने वालीहै पिछलेदिन बहुत फिकरवेचीचेसोअबईश्वरचाहे कामपूर्ण होंगे आसपूरीहोगी मिलके लाभएक जीवमें चित्त बिशेषकर रहता है सो आनन्द में बीतेगी काम देव की उन मत्तता में बुद्धि न्यूनभी होजाती है

१४३. हे प्रच्छक अब कार्य फिक्र को हो तुम्हें खुशखबरी होनेवाली है गई सो गई अब राखरही अब बहुत देगा वही मनोर्थ पूर्ण होंगे परन्त एक फिक्र भारी दीखै है ऊपरसे खर्च आवै है पास धन विशेष नहीं दीखता परंतु चिंता मत करना काम बड़ा इज्जन के साथ बनेगा और कई जगह से लाभ होगा करनेवाला और है वही फिक्र कर रहा है अब विशेष लाभ की सूरत होगी मित्र में चित्त बहुत रहना है वे भी चित्त से प्यार करै है अब तुम शीघ्र इस कार्य की सिद्धि चाहो तो श्री गंगाजी के ५ ब्राह्मणोंको खांड के जिमाओ और सट्टी चावल दही दान करो काम शीघ्र फतै होगा और गुप्त लाभ होगा घरमें चांद ना होगा एक काम गुप्त से गुप्त न किया बना था सो ईश्वर का ध्यान रक्खे करे।

१४४.हेपच्छकतुमपर बहुतदिनोंसेदशा नाकिसथीनहींतो निहालहोजातेलाभ कामूरतमेंहानपैदा होगईगुप्तशत्रुबुराई करेहैअबएकऔरखुशीकीबाततुम्हेंहोने कोहोरहीहैदशानाकिसमें धनमालका निकलजानापीडाका घरमें बासहोना इज्जतकाभयहोना रोजगारमेंहानहो नाहुवाहुवाया मंगलाचारका हटजाना राजद्वारकीचिंताहोनी येसबबातनाकि सदशामेंहोतीहैंअबतुमशामकोघृतका दीपकशिवजीके मद्रमें प्रज्वलितकरो औरजलकालोटाभरकेशिवजीकोऔर पीपलकोदो औरइतवारको ब्राह्मणाजि माओकईग्रहतुम्हारीरासपरनाकिस हैं पत्रेमेंदेखोसोनाकिसदशाकाफलन्यून होजायगाजोमनोकामनाहै पूर्णहोगी

१४५.हेप्रच्छकअबतुम्हारेखोटेदिनगये अच्छेआनेवालेहैं अबतक तुमनेबहुत नाकिसदशाझली नाकिसदशा में ही ऐसेकामहोतेहैं जोफिक्रतुमपरहैं बहुत नुक्सानउठायालाभकमरहापीड़ारूपी क्लेशमें धनखर्च औरचीज निकलगई इज्जतकाभयहुवापरन्तु अबअपनेइष्ट देवकापूजनापितृपीडाकाजतनऔरक्रूर ग्रहकादानानिश्चकरकेकराओफिरशीघ्र औरनयेलाभहोंगे जीवकीप्राप्ति.मित्रसे मुलाकातजोहैविशेषहोगीघरमेंमंगला चारउच्चपदवी प्राप्तहोगी ग्रहकीपीड़ा नष्टहोगीशत्रुकानाश औरयेजोमनकी कामनाहैसो पूर्णहोगी औरवड़ेरफिक्र जोऊपरसेखर्चकेदीखेहैंसोसबआनंदमें कांटासानिकलजायगाकामसिद्धहोगा

१४६.हेप्रच्छक प्रश्न इससमयकाबहुत श्रेष्ठतुम्हारादीखताहै बुरेदिनगयेअच्छे आनेवालेथे सोतुम्हारीरासपैदोतीनग्रह मध्यमआगयेऔरतुमनेउनकादानजप करायानहीं इसकारण ऐसेफिक्रचिंता झेलीलाभकमरहाखर्चाविशेषहेपीडाकी चिंताचित्तमेंभयसाहोनाकामउरझाला भकाअभीनहींबनाजीवकीचिंताहैबश कीबद्धिकोमंगलाचारहोनाएकअपना प्याराहैउसीमेंचित्तबहुतरहताहैराजद्वा रकी चिंता अवछायादानऔरचनेकी दालपैलावस्त्र हल्दीस्वर्ण दानकराओ ईश्वर चाहेतो मनकीकामनापूर्णहोगी उच्चपदवीमिलेगी जीवकी प्राप्तिलाभ बढे भूमिसेलाभ पीडा नष्ट होगीऔर राजद्वार सेभी काम में फतह होगा

१४७.हेप्रच्छक प्रश्न मध्यम है अभी
तुम्हारीमर्जीमाफिक्कामहोनेमें देरहै
कष्टरूपीरंजक्केशचिंताबहुत रही काम
होताहोतारुकजावेहैयेमध्यम दशाका
फलहैकहींगवनहोताभी ताज्जुब नहीं
एकमित्रसेप्रीतबहुतहै एकशत्रुगुप्त है
अबउसकामिलनाकठिनहैमंगलाचारमें
देरहैएकजीवकीभीअबलाषाहैअबतुम
नवगृहका पूजनदान करोदशा न्यून
बदलेगीश्रेष्ठआवेगीसो सब कामउत्तम
होंगेजीवकालाभगईहुईचीजफिरआवे
गीकष्टबाधानष्टहोगीउच्यपदवीमिलेगी
राजद्वारसेकामसिद्धहोगागुप्तचिंतामिट
गीचित्तमेंअनेकप्रकारकीवार्ताचित्तवन
करतेहोचित्तकीवार्ताचित्तमेंसमाजाती
है अबखुशीकी वार्ता सुननेमेंआवेंगी

१४८.हेप्रच्छकजब दशाजीवपैनाकिस आतीहैऔरग्रहचौथेआठवेंबारहवेंहोजा तेहैंतबऐसेकामहोनेहैं खर्चाविशेपलाभ कमऔरएकजीवकाबहुतध्यानरहताहै सोआरामामिलेगा ओरहाथसे निकला धनदेरसेप्राप्तहोगा जिसकामकोकरना विचाराहो समझकेकरना अभीभाग्य उदयहोनेमेंकिंचितविलम्बहैएकामित्रमें बहुतमनरहताहैसोउससेप्रीतबढ़ेगीऔर मिलेगानयालाभहोगादोतीनग्रहतुम्हा रेनामकीरासपैकैड़ेहैंउनकापत्रादेखकर यत्नकराओनहींतोविशेषक्लेशहोगादुख होग्रहोंकायत्नहोतेहीआरामहोगाउच्च पदवीहोगीकाममेंफायदाहोएकजगह सेविशेपमालमिलेगाविलंभसेखातरजमा रक्खोईश्वरकाभजनकराकरोभूलोमत

१४९. हे प्रच्छक तुम्हारी बुद्धि भ्रम में रहती हैं ईश्वर को सत्य नहीं मानते जिसने इतना बड़ा किया है और बराबर रक्षा करी है सो वह कहीं चला नहीं गया है बराबर रक्षा करेगा उस का भजन करो अन्त में आसा पूरण होगी और गई सो गई अब राख रही और वो मिलेगा मौजूद है चिंता मत करो आगम की सुरत हो रही है एक काम में विशेष लाभ होगा परंतु अब मंगल के व्रत और पक्षियों को नाज भोजन डाल दिया करो बड़ा पुन्य का काम है क्रूरग्रहों का जपदान करा तेरहा करो मन वांछित फल मिलेगा कार्ज सिद्ध होंगे जो बड़े खर्च के काम समझ रक्खे हैं कांटा सा आनन्द में निकल जायगा कामदेव की उनमत्ता में बुद्धि न्यून होजाती है

१५०. हे प्रच्छक इस समय के प्रश्न का यह फल है कि तुमनेजो प्रश्न विचारा है सो काम सिद्ध होगा और लाभ की सूरत और आराम की सूरत नजरआतीहै।पिछलेसाल महीनेमध्यम रहे खर्च विशेष आमदनी न्यून अब भाग्यउदयहोगा और कामफतह होगा थोडा बिलंब है लाभकी सूरत होकर हटजातीहै ईश्वरका स्मरण चित्त लगा करकरो और घृत सांभर दानकरो अब नये सिरेसे आनन्द का प्रबन्ध होगा एक काम तुम से न्यून बनगया सो ईश्वर भी जाने है अब भजन विशेष करने से कार्य की सिद्धि होगी और बहुतसी प्राप्तिहोगी नवीननवीन वार्ता की समुद्रकी तरंगसीचित्तमें उठतीहै

१५१. हेप्रच्छककाम तुम्हारेमें विलंबहै
कामअभी ठीकनहोगा दशा नाकिसहै
कईग्रह नाकिमहैं पंचांगखोलकर देखो
सोचोहोकुछहोहैकुछकईवातोंकीचिंता
हैजीवकीधनकीमंगलाचारकीकष्टरूपी
क्लेशकीपरंतुतुम सतवादीहोसत्यवोलने
कोपसंदकरतेहोझूंटसेक्रोधितहोतेहोपरा
येकाममेंमनसेप्रीतलगाकेकरतेहोकिसी
काबुरानहींचाहतेतुम्हेंविद्याकमहैपरंतु
बुद्धिअकलबड़ेविद्वानोसेविशेपहैहरएक
कीवातकोझूठसत्यकी परिक्षा समझलो
होएककामन्यूनवनगयाथासोईश्वरकी
भक्तिविशेषकरोश्रीगंगाजीके५ब्राह्मण
खीरखंडकेजिमाओमनवांछितफलमि
लेगालाभहोगासिरपेवडाजोफिक्रसमझ
रक्खाहै सवकामआनंदमें होजायगा

१५२ हेप्रच्छक तुम्हारा प्रश्न शगुण इसवक्त बहुतश्रेष्टहै तुम्हे बिना कार्ण चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न होजाताहै बुद्धिभ्रमणहोजातीहै गयासोगयाफिर आवेगा मिलेगा क्या मिलेगा आराम मिलेगा धनामिलेगा मंगलाचार होगा पीडाकानाशहोगा जीवकोखुशीहोगी अकस्मात खुशखबरीहोगी अपने इष्ट देव पित्रदेवताके निमित्त वस्त्र मिष्टान्न कच्चादूध मावस्याको पिलातेरहाकरो रोजगार बढेगा उच्च पदवी पाओगे एकजीवकाध्यान मित्रकेध्यानमेंचित्त बहुतरहताहै तुम्है विद्यामध्यमहै परंतु अकलबुद्धितेजहै किसीकाबुरा नहीचा हतेसत्यवार्ताको पसन्दकरतेहो खर्चहै अंजाम कुशलहै राजद्वारसेअन्तफतेहै

१५३हेप्रच्छक येजोतुमने प्रश्नकियाहै
जोहोगयासोहोगया अबखुशीकीवार्ता
होनेवालीहैखोटेदिनगये श्रेष्ठआनेवाले
हैंआरामहोगाकारजफते होगाजिसकी
चाहनाहैमिलेगाऔरयेजोचित्तमेंकाम
बिचाराहैदेरसे होगा धिनतुमकोबहुत
दिनोंसे मध्यमहैं मजिकेमाफिकलाभ
नहींहैनष्टदशामेंरजक्लेशपीड़ागुसाचिंता
शत्रुताहोतीहैमोअपनीरासपै जोदाती न
ग्रहनाकिसहैंदानमंत्र जपाकरो तबघर
में आनन्द मंगलाचार जीवकी प्राप्ति
यात्रासे लाभ काम फतेहोंगे गुप्तप्राप्ति
होगी तुम्हारेशरीर पै व्रणयानी फोडे
फुंसी का निशान है आलस्य रहताहै
नई नई बात का चितवन करते हो

१५२ हेप्रच्छक् तुम्हारा प्रश्न शगुण
इसवक्त बहुतश्रेष्टहै तुम्हे बिना कार्ण
चिंता फिक्र भयसा उत्पन्न होजाताहै
बुद्धिभ्रमणहोजातीहै गयासोगयाफिर
आवेगा मिलेगा क्या मिलेगा आराम
मिलेगा धनामिलेगा मंगलाचार होगा
पीडाकानाशहोगा जीवकोखुशीहोगी
अकस्मात खुशखबरीहोगी अपने इष्ट
देव पित्रदेवताके निमित्त वस्त्र मिष्टान्न
कच्चादूध मावश्याको पिलातेरहाकरो
रोजगार वढेगा उच्च पदवी पाओगे
एकजीवकाध्यान मित्रकेध्यानमेंचित्त
बहुतरहताहै तुम्है विद्यामध्यसहै परंतु
अकलवुद्धितेजहै किसीकाबुरा नहीचा
हतेसत्यवार्ताको पसन्दकरतेहो खर्चहै
अंजाम कुशलहे राजद्वारसेअन्तफतेहै

१५३हेप्रच्छक येजोतुमने प्रश्नकियाहै जोहोगयासोहोगया अबखुशीकीवार्ता होनेवालीहैखोटेदिनगये श्रेष्टआनेवाले हैंआरामहोगाकारजफतै होगाजिसकी चाहनाहैमिलेगाऔरयेजोचित्तमेंकाम बिचाराहैदेरसे होगा दिनतुमकोबहुत दिनोंसे मध्यमहैं मजिकेमाफिकलाभ नहींहैनष्टदशामेंरजक्लेशपीड़ागुप्तचिंता शत्रुताहोतीहैसोअपनीरासपै जोदोती न ग्रहनाकिसहैंदानमंत्र जपाकरो तबघर में आनन्द मंगलाचार जीवकी प्राप्ति यात्रासे लाभ काम फतैहोंगे गुप्तप्राप्ति होगी तुम्हारेशरीर पै व्रणयानी फोडे फुंसी का निशान है आलस्य रहताहै नई नई बात का चितवन करते हो

१५४ हे प्रच्छक तुम को पिछले दिन बहुत नाकिसाफिक्रसे गुजरे और खर्च विशेषलाभ मध्यम सोअबप्राप्तिहोगी जीवकालाभहोगा व्याधा रंजनष्टहोंगे घरमें खुशीहोगी।चित्तकी।चिंता।चित्तमें समाजातीहै समुद्रकी तरंगसीनई नई उठतीहैंसोअथाजातीहै एकजीवमें।चित्त बहुतरहताहै अबईश्वर चाहेतो कहींसे खुशीकी बातसुनोगे उच्चपदवी प्राप्तहो गी। नाकिसअड़ोंकादान औरसबेरशाम शिवजीका भजनकरेकरो और येजो प्रश्नकिया है वो काम भी फतेहोगा मिलेगा।फिक्र गया यात्रा से लाभ होगा गई सो गई अब राख रही को काम कानू से बाहर है सिद्ध होगा ईश्वरका भरोसाकरो काम फते होगा

१५५ हेप्रच्छकतुम्हारा कार्यसिद्ध होगा
प्रथम दशा न्यून थी अब दशा श्रेष्ट
आनेवालीहै जीवकी चिंता औरलाभ
का उद्योग विशेष परन्तुलाभ अधूरा
होताहै और येजो अबफिक्रहैखर्चसो
दूरहोयगाआरामगुप्त वोभीमिलेगाफतै
होगा कष्टनष्ट होगा कईग्रह नामकी
रासपरनाकिसहैंसोउन ग्रहोंका उपाय
बिधिपूर्वकपंडितसेकराओ बिनादानके
करायेकार्यसिद्धदेरसेहोगाइसकारणचा
वलमिष्टान्नस्वेतवस्त्ररजानित अर्थात् श्र
द्धाप्रमाणचांदीदानकाकरना बहुतश्रेष्ट
हैमनकीकामनापूर्णहोगी अचानकला
भकीसूरतहोगीचित्तस्थिरकरके किसी
कालईश्वरकाभजनकराकरो प्रश्नश्रेष्ट
है अंजाम कुशलहैं तीर्थयात्रा श्रेष्टहै

१५६ प्रच्छकइसमयकेप्रश्नकाथफल
हैकार्यआधीनसेवाहरअर्थात्कामकाव्
सेवाहरचिंताकष्टकईजीवशत्रुतागुप्तकरें
हैंपरंतुउनसेकुछहोनहींसक्ता १जीवमें
चित्तबहुतरहताहैदशामध्यमकेकारण
अनेकप्रकारकीहानवार्तालापसोचोहो
समुद्रकीलहरसीउठतीहैनईनईबातका
चितवन होकर निर्फलहोताहैकईफिक्र
भारीलगेहुवेजीवकीप्रसिद्धोगीफतेऔर
चंगाहोगाओरयेजोअब चिंताहैसबदूर
होपीतदानकरो चनेकीदानहलदीपला
वस्त्रपेलपुष्पसुवर्णश्रद्धाप्रमाणगुप्तचिंता
दूरहोगीकार्यफतेहोगा मनवांछितफल
प्राप्तहोगादशान्यूनकेकारणफिक्रचिंता
गृहमेंक्लेशहोताहै अबदशाश्रेष्ट आनेवा
लीहैयेकार्यहोकर नवीनकृत्यकरोगे ॥

१५७ हे प्रच्छक तुम्हारा प्रश्न चिंता रूपी कष्ट का है खर्च विशेष जीव की लालसा जीव चिंता तरह २ उद्वेग चित्त स्थिर नहीं काम काबू में बाहर है दूसरे आदमियों को भी बहुत फिक्र है जब दशा मध्यम होती है अपने भी पराये हो जाते हैं परंतु अभी कार्य में विलम्ब है कामना पूर्ण तो होगा परंतु पापग्रहों का पूजन विधिपूर्वक बटकभैरव का मंत्र भी जपावाओ [मंत्र] ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुकभैरवाय आपदुद्धारणाय सर्वविघ्ननिवारणाय मम रक्षा कुरु कुरु स्वाहा। इस मंत्र के जाप से मनोकामना पूर्ण होगी और ये जो चित्त को दीर्घ चिंता है सो काम हो और मिलेगा खर्च विशेष है एक जीव में चित्त भी बहुत रहता है लाभ अधूर होते हैं नई २ वार्ता का चितवन रहता है परन्तु अन्त में कुशलता है

१५८हेप्रच्छक कामना पूर्णहोगी खुशी कीवार्ताहोनेवाले है मिलगामार्जीकेमा फिक कामहो चित्त उसविनाव्याकुल सारहताहै दशान्यूनकेकारण ऐसेकाम हुए धन का खर्च जीवकादुख काम दूसरेके काबूमें होना औरदोतीन ग्रह तुम्हारीरासपैकेहैं मध्यमहैंपंचांग में देखोउनमध्यमेंग्रहोंका पूजनदानमंत्र स्थिरचित्त करकेकराओकार्यशीघ्र सिद्ध होगा और येजो फिकहै सोदूरहोगा औरकई फिक खर्चकेआवैंहै सो काम सिद्धहोंगे धन मिलेगा जीवकी प्राप्ति होगी परन्तु बिलम्बहैपूजनदानसकार्य सिद्धहोगागुप्त लाभहोगाअब अंजाम अच्छा दीखहै कार्यमें भी लाभ होगा शिव जी का पूजन नित्य किया करो

१५९ इससमयकेप्रश्नका फलयेहै किका मठीकबैठेगायान बैठेगाइज्जनका भय होजाताहै ऐसीदशामेंगवनभीहोताहै गुप्तचिंत्तारहेहैं कभीचित्तमेंकुछआताहै कभीकुछआताहै ऐसीदशामें खर्चविशे षहोताहै एकगुप्तमनोर्थहैसोकवतकआ रामहोगासो अवन्यूनदशावीचनेवाली हैऔरश्रेष्टआनेवालीहै परन्तकाममेंदेर हैइष्टदेवकापूजन करनाचाहिये पित्रोंके निमितमिष्टान्नवस्त्रकच्चा दूध पीपल को जलदेना श्रेष्टहै कईमहिनेसेभ ग्यकीहीनतायानीमध्यमहैपूजनकरनेसेधनकी प्राप्तीजीवका मिलना कष्टरूपीरजका दूरहोना येजोअव वहुतचिंताहै काम जरादेरसे मर्जीकेमाफिक होगा काम कावूसे वाहर होगया दशा मध्यमहै